Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः॥

साङ्गोपाङ्ग दीपावली महालक्ष्मीपूजन पद्धतिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीदुर्गासप्तशती

वाराणसी के शीर्षस्थ विद्वान याज्ञिक सम्राट वेणीराम गौड़, वेदाचार्य ने श्री दुर्गासप्तशती के शुद्ध रूप का सरल हिन्दी अनुवाद किया है। बहुत मोटे अक्षरों में छपी पुस्तक के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में पाठ के अनुरूप माँ दुर्गा का चित्र है। इसके अतिरिक्त शतचण्डी, सहस्त्रचण्डी, अयुतचण्डी, लक्षचण्डी प्रयोग, दुर्गापाठ-हवन, बलिदान तथा प्रत्येक अध्याय के अंत में हवन सामग्री, दुर्गा यंत्र, सप्तशती यंत्र, नवार्ण यंत्र, घटार्गल यंत्र तथा अनेक विशेष स्तोत्र भी अनुवाद सहित दिये गये हैं। मूल पाठ करने अथवा अनुवाद सहित पढ़ने वालों-दोनों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

पृष्ठ संख्या : ४८८ मूल्य :₹ १०१.०० डाकखर्च : अलग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥

साङ्गोपाङ्ग दीपावली-महालक्ष्मीपूजन पद्धतिः

(कुबेर-पूजन समन्वित)

(विश्वमोहिनी टीका सहित)

लेखक :

आचार्य सुधीर शर्मा वेदपाठी

कर्मकाण्डमार्तण्ड, साहित्याचार्य, वेदाचार्य, ज्योतिषाचार्य

सन् १८७४ से पूर्व स्थापित पुस्तक प्रकाशन परम्परा

प्रकाशक : **नाथ पुस्तक भण्डार** ११४-दरीबा कलाँ, दिल्ली-११०००६

पूजा व धार्मिक पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता तथा प्रकाशक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक :

नाथ पुस्तक भण्डार
१९४-दरीबा कलाँ,
दिल्ली-११०००६
दूरभाष : २३२७५३४४

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : गङ्गादशहरा ज्येष्ठ शु० १०, वि०स० २०६९

कम्प्यूटर कम्पोजिंग : वैदिक प्रेस, कैलाशनगर, दिल्ली-३१, दूरभाष : २२०८१६४६

मूल्य : रु० ७१.०० (डाक-व्यय पृथक्)

सजिल्द : १०१.००

शिवनाथ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीहरिः ॥

धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो,
प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो,

हर हर महादेव !

प्रास्ताविक

किसी भी देश की संस्कृति एवं सभ्यता का परिचय उसके उत्सवों से होता है। पुण्यभूमि भारत का यह पक्ष अति प्रबल है । महामाङ्गल्यप्रद कार्तिक मास सम्पूर्ण ही उत्सव है, उसके कृष्णपक्ष की अमावस्या अपने आप में एक महोत्सव है । इस ही दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्र के रावणवधोपरान्त अयोध्या लौट आने की प्रसन्नता में दीपावली का महोत्सव मनाया जाता है ।

इस ही दिन प्रातःकाल हनुमद्दर्शन एवं पूजन तथा लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेरादिपूजन तथा च सायंकाल देवमन्दिरों में दीपदानादि सम्पन्न होता है । मध्यरात्रि में महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती का पूजन किया जाता है । इन सभी के सम्पादनार्थ गुरु-धर्मज्ञान-भावना परमावश्यक हैं । आचार्य प्रशस्तपाद के मत में यह तीनों तत्त्व (गुरु-धर्माधर्म-भावना) अतीन्द्रियतत्त्व हैं–"**गुरुत्वधर्माधर्मभावनाः अतीन्द्रियाः।**" इनके सम्यक्-ज्ञान में ही कृत्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

की सम्पूर्णता है तथा च इन में वाणी एवं मन की अप्राप्यता है–

"यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ।"

दीपावली श्रीराम से सम्बन्धित है । श्रीराम "श्यामतेज" हैं । इसमें ही लक्ष्मीपूजनादि "गौरतेज" हैं । "श्यामतेज" एवं "गौरतेज" का समकालीन पूजन पाप–बाधादि का विनाशक है । इन तेजद्वय के समकालीन पूजन का अभाव अत्यन्त अनिष्ट–पापादि फलदायक है–

गौरतेजो विना यस्तु श्यामतेजः समर्चयेत् ।
जपेद्वा ध्यायते वापि स भवेत् पातकी शिवे ॥ (सम्मोहन तन्त्र)

किसी पूजन प्रक्रिया का साङ्गोपाङ्ग होना आवश्यक है । मनमाने भाव से किया गया पूजन अभीष्ट फलदायक नहीं होता । दीपावली एवं महालक्ष्मी पूजनादि विषय पर अनेकों ग्रन्थ प्राप्त होते हैं परन्तु साङ्गोपाङ्ग ग्रन्थ का अभाव था, इधर आचार्य प्रवर श्री सुधीरशर्मा वेदपाठी जी ने **"साङ्गोपाङ्ग दीपावली–महालक्ष्मी पूजन पद्धतिः"** (कुबेरपूजन समन्वित) इस ग्रन्थ की रचना करके इस अभाव को पूरा कर दिया । एतदर्थ विद्वान् ग्रन्थकार साधुवाद के पात्र हैं ।

विद्वान् ग्रन्थकार आचार्य श्री सुधीरशर्मा वेदपाठी जी को आस्तिकता शास्त्रीय आचार धर्मसम्राट् स्वामी श्री करपात्री जी महाराज की परम्परा से अपने पूज्य पितामह श्री पं०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जगतराम शर्मा वेदपाठी जी, अपने पूज्य पिता श्री पं० सुन्दरलाल जी शर्मा वेदपाठी जी, श्री लक्ष्मीनारायण जी शर्मा वेदपाठी जी आदि से परम्परया प्राप्त है । इनका व्यक्तिगत जीवन भी शुद्ध–पवित्र है ।

अपने इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने पूजन के सभी अङ्गों का यथाशक्य प्रतिपादन किया है । इन अङ्गों में

मङ्गलाचरण (स्वस्तिवाचन), श्री गणेशाम्बिका पूजन, कलशस्थापन, षोडशमातृकापूजन, सप्तघृतमातृकापूजन, नवग्रहपूजन, श्रीमहालक्ष्मीपूजन, श्री महाकाली (मषीपात्र "दवात") पूजन, श्री महासरस्वतीपूजन (बही–बसना) पूजन, श्री कुबेर (वैश्रवण) पूजन, तुलापूजन, दीपक (दीपावली) पूजनादि

के साथ अनेकों सिद्धिदायक मन्त्रों एवं सिद्धिदायक स्तोत्रों का भी प्रतिपादन किया है । स्तोत्रों का तो पाठ किया जा सकता है, परन्तु मन्त्रों को अधिकारी गुरु से प्राप्त करके ही विधि–अधिकार एवं श्रद्धा से जप सकते हैं, जिसके अभाव में अधिक हानि की सम्भावना है :–

पुस्तके लिखितान् मन्त्रान् दृष्ट्वा जपति यो नरः ।
जीवन्नेव स चाण्डालः मृतःश्वा चाभिजायते ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो मनुष्य पुस्तक में लिखे मन्त्रों को देखकर जपता है (गुरुमुख से प्राप्त किए बिना), वह जब तक जीवित है तब तक चाण्डाल है और मृत्यु के उपरान्त श्वान (कुत्ते) की योनि में उत्पन्न होता है ।

आचार्य श्री सुधीरशर्मा वेदपाठी इस ग्रन्थ की रचना करके वर्धापन के पात्र हैं । श्रीमन्नारायण इन्हें दीर्घ, सफल एवं स्वस्थ जीवन से सम्पन्न करें तथा लोकोपकारक अनेकों ग्रन्थों की भविष्य में भी रचना करें ।

पुनः इनके सर्वविध सफल जीवन की कामना करता हूँ ।

दिल्ली;
गङ्गादशहरा, ज्येष्ठ शु० १०,
वि०स० २०६९ (तदनुसार ३०.५.२०१२)

डा० रघुनाथ शर्मा
एम.ए., पी-एच.डी.
संस्कृतविभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
उपाध्यक्ष–अ०भा० धर्मसंघ
मन्त्री–धर्मसंघ महाविद्यालय (दिल्ली)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीहरिः ॥

शुभाशीः

स्वस्ति श्री पण्डित सुधीर शर्मा आचार्य जी,

आपके द्वारा अनेक ग्रन्थों से संगृहीत साङ्गोपाङ्ग दीपावली महालक्ष्मी पूजन-पद्धति मैंने सिंहावलोकन न्याय से देखा ।

यह पुस्तक वैदिक, तान्त्रिक मन्त्रद्वारा परिपुष्ट है-"**मन्त्रैरेव स्मर्तव्यः**" यह वैदिक निरुक्ति होने से भक्तों को अभीष्ट ऐहिक, पारलौकिक सुख समृद्धि प्राप्त करने में शास्त्रीय मार्ग होगा। पण्डितों द्वारा गणेश-लक्ष्मी, तथा श्री त्रिपुरसुन्दरी भगवती पूजन में सर्वदा उपयुक्त होगा। पण्डित जी की शुभकामना करता हूं इसी प्रकार प्रसिद्ध वर्ष दिन के कृत्य कार्यसार आदि ग्रन्थ प्रणयन में ईश्वर सामर्थ्य दें ।

-स्वामी विमलानन्द तीर्थ
दशाश्वमेध घाट
कामरूप मठ, वाराणसी
२३।६।२०१२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीहरिः ॥

शुभाशंसनम्

पूजा एवं आराधना में विधि एवं श्रद्धा का विशेष स्थान है। इनका अभाव कर्मलोप का द्योतक है एतदर्थ सम्पूर्ण वैदिक कर्मकाण्ड साङ्ग एवं सोपाङ्ग होना परमावश्यक है। यद्यपि दीपावली एवं महालक्ष्मी पूजन पर अनेकों ग्रन्थ प्राप्त हैं, तथापि श्री पंडित सुधीर शर्मा वेदपाठी का यह नवीनतम सुप्रयास अत्यन्त श्रेयस्कर है।

इनका सामग्री संकलन इनके विशेष प्रयास एवं श्रद्धा का परिचायक है। इनके ग्रन्थ को मैंने सावधानी से देखा ये अपने इस सुप्रयत्न के लिए हार्दिक वर्धापन एवं आशीर्वाद के उपयुक्ततम पात्र हैं। श्री पण्डित सुधीर शर्मा वेदपाठी जी ने इस ग्रन्थ में गणपति, लक्ष्मी, राजराजेश्वरी, महात्रिपुरसुन्दरी आदि महातत्त्वों का साङ्गोपाङ्ग तथा धनद श्री कुबेर पूजन का भी प्रतिपादन किया है । मुझे विश्वास है कि इस वैदिक विद्वान् का सुप्रयास सुधीजनों के सन्तोष का प्रयोजक होगा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरा मानना है कि यह ग्रन्थ धर्मसम्राट् श्री स्वामी करपात्री जी महाराज एवं उन्हीं के आत्मस्वरूप ज्योष्पीठाधीश्वर श्री स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज तथा पुरी पीठाधीश्वर श्री स्वामी निरञ्जन देव तीर्थ जी महाराज के द्वारा स्थापित एवं परिपोषित अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ के शास्त्रमत सिद्धान्तों के अनुकूल है एतदर्थ विद्वान् लेखक श्री पं० सुधीर शर्मा वेदपाठी धन्यवाद एवं आशीर्वाद के सुपात्र हैं । मैं इनकी सर्वविध मङ्गलकामना करता हूँ ।

–हीरालाल शर्मा शास्त्री
आयुर्वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य
प्रधानाचार्य धर्मसंघ महाविद्यालय, दिल्ली

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा
(तदनुसार ३।७।२०१२)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विषयानुक्रमणिका

क्रमाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
१.	मंगलाचरणम्	१३
२.	स्वस्तिवाचनम्	१७
३.	श्री गणेशाम्बिका पूजनम्	२६
४.	कलशस्थापनं पूजनञ्च	४२
५.	षोडशमातृका पूजनम्	५४
६.	सप्तघृतमातृका पूजनम्	६५
७.	नवग्रहादिदेवानां स्थापनं पूजनञ्च	७०
८.	चित्र (श्रीराजराजेश्वरी, श्रीयन्त्रराज)	१००-१०१
९.	श्रीमहालक्ष्मी पूजनम्	१०२
१०.	श्रीमहालक्ष्मी आवरण पूजनम्	११८
११.	श्रीमहाकाली (मषीपात्र "दवात") पूजनम्	१४२
१२.	श्रीमहासरस्वती (बही-बसना) पूजनम्	१४४
१३.	श्रीवैश्रवण (कुबेर) पूजनम् (आवरण पूजन सहितं)	१४७
१४.	सर्वदारिद्रयनाशनोऽपरः कुबेर मन्त्रः	१६४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१५.	तुला पूजनम्	१६७
१६.	दीपक (दीपावली) पूजनम्	१६९
१७.	धनप्रदायक महालक्ष्मी मन्त्राः	१७०
१८.	श्रीकमला अष्टोत्तरशतनामावलिः	१७२
१९.	श्रीसूक्तम् (फलश्रुति सहितम्)	१७७
२०.	महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्रम्	१९१
२१.	कनकधारा स्तोत्रम्	१९४
२२.	श्रीराजराजेश्वर्यष्टकम्	१९८
२३.	वैदिक आरार्तिः	२०१
२४.	श्रीलक्ष्मी जी की आरती	२०२
२५.	श्रीदेव्या आरार्तिक्यम्	२०४
२६.	मन्त्र पुष्पाञ्जलिः	२०६
२७.	क्षमाप्रार्थनां	२०९
२८.	विप्रार्चनम्	२११
२९.	आशीर्वादः, देव विसर्जनम्	२१२
३०.	जयघोषः	२१३
३१.	पूजन सामग्री सूची	२१४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीशुक्लयजुर्वेदीय मंत्रसंहिता

जन्म से मरणपर्यन्त कर्मकाण्ड के क्रिया कलाप में वेद मंत्रों का ही प्रयोग होता है। यजुर्वेद में वर्णित दिन-प्रतिदिन प्रयोग में आने वाले ५२५ मंत्रों के अभ्यास से कर्मकाण्डी वेदपाठी पुण्याह्वाचन, नवग्रह, षोडशमातृका, नित्यहोम, देवपूजन, अरणिमन्थन, यज्ञ यागादि अनुष्ठान विधि विधानपूर्वक सुगमता से पूर्ण करा सकते हैं। परिशिष्ट में जटादि विकृतियों के उदाहरण लक्षण प्रतीक रूप में दिये हैं। कर्मकाण्डी वैदिकों के लिए परम उपयोगी रचना है।

मूल्य : रु० ७१.००　　　　डाक व्यय अलग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीगणपतिर्जयति ॥

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥

ऐंकार ह्रींकार रहस्ययुक्त श्रींकार गूढ़ार्थ महाविभूत्या ।
ॐकार मर्म प्रतिपादिनीभ्यां नमो नमः श्रीगुरूपादुकाभ्याम् ॥

कृतनित्यक्रियो पूजकः शुद्धासने प्राङ्मुख उपविश्य, पवित्रीकरणं कुर्यात् ।
नित्य क्रिया से निवृत होकर पूजक शुद्धासन पर पूर्वाभिमुख बैठकर पवित्रीकरण करें ।

पवित्रीकरणम्—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इति मन्त्रेणात्मानं सम्प्रोक्ष्य अक्षतपुञ्जे रक्षादीपं निधाय ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिराचमनम्—

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः । इति त्रिराचम्य । ॐ हृषीकेशाय नमः हस्तौ प्रक्षाल्य ।

पवित्रधारणम्[1]—

ॐ पवित्रेस्त्थो व्वैष्ष्णव्व्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसव ऽउत्त्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पवित्त्रेण सूर्य्यस्य रश्मिम्भिः। तस्य ते पवित्त्रपते पवित्त्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

इति मन्त्रेण पवित्रधारणं कृत्वा [2]प्राणायामत्रयं कुर्यात् ।

दिग्रक्षणम्—

वामहस्ते गौरसर्षपान् गृहीत्वा दक्षिणेनाच्छाद्य—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

---

१. कुशपवित्राभावे हेमपवित्रं धार्यम् ।।

२. प्राणायामैर्विना यद्यत्कृतं कर्म निरर्थकम् । अतो यत्नेन कर्तव्यः प्राणायामः शुभार्थिना (अगस्त्यः), यथापर्वत धातूनां दोषान्दहति पावकः। एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते ।। (म.नि.त.)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥
भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः । स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्विमाम्॥
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन । ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु पूजाकर्म करोम्यहम् ॥

एतैर्मन्त्रैः गौरसर्षपान् सर्वदि़क्षु विकिरेत्–

पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः ।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः ॥
पश्चिमे पातु गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः ।
उत्तरे श्रीपति रक्षेद् ऐशान्यां तु महेश्वरः ॥
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद् ह्यधोऽनन्तस्तथैव च ।
एवं दश दिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः ॥

"ॐ हुं" इति मन्त्रेण वामपादेन त्रिवारं भूमिं ताडयेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पृथ्वी पूजनम्—

विनियोगः—पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः।

मन्त्रः— **ॐ पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।**
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

ॐ आधारशक्तये पृथिव्यै नमः, कमलासनायै नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।

दीपपूजनम्[1]—

मन्त्र : **ॐ अग्निर्ज्ज्योतिषाज्ज्योतिष्मान्रुक्मोव्वर्च्चसाव्वर्च्चस्वान्।**
सहस्त्रदाऽअसि सहस्त्रायत्त्वा ॥ १३।४० ॥

१. कार्पासवर्तिका प्रोक्ता दीपकृत्येषु सर्वदा ।
न चैव स्थापयेद्दीपं साक्षाद्भूमौ कदाचन ॥ (इति सुदर्शने)
आयुर्दः प्राङ्मुखो दीपो धनदः स्यादुदङ्मुखः ।
प्रत्यङ्मुखो दुःखदोऽसौ हानिदो दक्षिणामुखः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्वं सुस्थिरो भव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कर्मसाक्षिणे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ।

स्वस्तितिलकम्—

ॐ सुचक्षाऽअहमक्षीभ्याम्भूयासꣳ सुवर्चा मुखेन ।
सुश्रुतकर्णाभ्याम्भूयासम् ॥ मं.सं. ॥

हस्तेऽक्षतपुष्पाणिगृहीत्वा गणपतिं ध्यात्वा स्वस्तिवाचनं कुर्यात् ।

ॐ आनोभद्राः क्रतवोयन्तुविश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः॥ देवानोयथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥१॥ देवानाम्भद्रा- सुमतिर्ऋजूयतान्देवानाꣳ रातिरभिनोनिवर्त्तताम्॥ देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमाव्व- यन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे॥२॥ तान्पूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दितिन्दक्षमस्रिधम्॥ अर्य्यमणंव्वरुणᳪसोममश्विनासरस्वतीनᳪ सुभगा-
मयस्करत् ॥३। तन्नोव्वातौमयोभुव्वातुभेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौः॥
तद्ग्रावाणᳪसोमसुतौमयोभुवस्तदश्विनाशृणुतन्धिष्ण्ययायुवम् ॥४॥ तमीशान-
ञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानोयथाव्वेदसाम-
सद्वृधेरक्षितापायुरदब्धᳪस्वस्तये॥५॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाᳪस्वस्तिनः
पूषाव्विश्ववेदाᳪ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिᳪस्वस्तिनोबृहस्पतिर्द्दधातु॥६॥
पृषदश्वामरुतᳪपृश्निमातरᳪ शुभँय्यावानोव्विदथेषुजग्ग्मयᳪ॥ अग्निजिह्वामनवᳪ
सूरचक्षसोव्विश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ॥७॥ भद्रङ्कर्णेभिᳪ शृणुयामदेवा-
भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राᳪ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितँ-
य्यदायुः ॥८॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासो-
यत्रपितरोभवन्तिमानोमध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दितिम्मार्तासपितासपुत्रः ॥ व्विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाअदिति-
र्ज्जातमदितिर्ज्जनित्त्वम्॥१०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः॥ व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः
सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि॥११॥ यतोयतः समीहसे-
ततोनोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नः कुरुप्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः॥१२॥ गणानां-
त्वागणपतिꣳ हवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳ हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳ हवा-
महेव्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम्॥१३॥ अम्बेऽअम्बिके-
ऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥
सुशान्तिर्भवतु । श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यांनमः। ॐ
उमामहेश्वराभ्यांनमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यांनमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यांनमः।
ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

मङ्गलश्लोकान् पठेत् (मङ्गल श्लोकों का पाठ करें) —

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥५॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥६॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान्मङ्गलायतनो हरिः॥७॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते! तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥८॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥९॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥११॥
स्मृते सकलकल्याणंभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥१२॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥१३॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥१४॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरान्।
सरस्वती प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये॥१५॥

स्वस्ति श्रीवरदमूर्तये नमः । इति गणेशं प्रणम्य । कर्मपात्रार्चनं कुर्यात्–

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्मपात्रार्चनम्—

भूमि पर त्रिकोण अथवा षट्कोण मण्डल बनाकर उस पर जल पूरित पात्र रखकर वरूण का आवाहन करें ।

विनियोगः—

तत्वामीत्यस्य शुनः शेप ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वरूणो देवता वरूणावाहने विनियोगः।

मन्त्रः— **ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः।**
अहेडमानो व्वरूणेहबोद्ध्युरूशꣳ समानऽ आयुꣳ प्रमोषीꣳ ॥१८/४९॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू ॥

मत्स्य मुद्रां आह्वाद्य, आलोड्य पूजा सामग्रीं सम्प्रोक्ष्य

मन्त्रः— **ॐ पुनन्तुमा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।**
पुनन्तु व्विश्वा भूतानि जातवेदꣳ पुनीहिमा ॥१९/३९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूर्यार्घ्यम्—

ताम्रपात्रे गन्धाक्षतपुष्पयुक्तानि त्रीण्यर्घ्याणि दद्यात् ।

भगवान् सूर्य को ताँबे के पात्र में रोली, चावल, पुष्प युक्त तीन अर्घ्य प्रदान करें—

मन्त्रः— ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकरः ॥

प्रार्थनां—आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने-दिने ।
जन्मान्तर सहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोऽपजायते ॥
एकचक्रो रथो यस्य दिव्यः कनक भूषितः ।
स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते भास्कराय नमः सूर्यार्घ्यं समर्पयामि नमस्करोमि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वदक्षिणहस्ते गन्ध-अक्षत-पुष्प-दूर्वा-फल-द्रव्य-जलादीन्यादाय सङ्कल्पं कुर्यात्।

सङ्कल्पः-हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैक-देशान्तर्गत अमुकमण्डले अमुकस्थाने अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकशर्मा (अमुकवर्मा, अमुकगुप्तः) अहं ममास्मिन् प्रचलितव्यापारे क्रयविक्रयद्वारा स्थिरलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकं सर्वाभीष्टफलप्राप्त्यर्थं आयुरारोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्ध्यर्थं व्यापारे उत्तरोत्तरलाभार्थं च दीपावलीमहोत्सवे गणेश-अम्बिका-कलशस्थापन-षोडशमातृका-सप्तघृतमातृका-नवग्रहमण्डलस्थापनपूजनादिपूर्वकं श्रीमहालक्ष्मी-महासरस्वती-महाकाली- लेखनी-मषीपात्र-कुबेरादिदेवानां पूजनं च करिष्ये" इति सङ्कल्प्य गणपत्यादिदेवानां पूजनं कुर्यात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस प्रकार सङ्कल्प करके निम्नलिखित विधान के द्वारा गणपति आदि सभी देवताओं का पूजन करें–

॥ अथ श्री गणेशाम्बिकापूजनम्[1] ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम । आहमजानि गर्ब्भ-धमात्त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥$\frac{२३}{१९}$॥

हे हेरब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज ।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभकयोः पितः॥१॥
नागास्य नागहार त्वं गणराज चतुर्भुज ।
भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः॥२॥

---

१. यो मोहादथवाऽऽलस्यादकृत्वा देवतार्चनम् ।
भुङ्क्ते स याति नरकं सूकरेष्वभिजायते ॥ (आह्निक)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च ममक्रतोः।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ॥३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिं आवाहयामि स्थापयामि इत्यावाह्य तदुत्तरतोऽम्बिकां स्थापयेत् ।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥$\frac{२३}{१८}$॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञᳬ समिमन्दधातु । व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामों ३म्प्रतिष्ठ ॥$\frac{२}{१३}$॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ एष वै प्रतिष्ठानामयज्ञोयस्त्रैतेन यज्ञेन यजन्ते ।
सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति ॥

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवताम् । इत्यक्षतैस्तन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य प्रत्येकं सह वा पूजयेत् । गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि । पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि । अर्घाङ्गमाचमनीयं समर्पयामि । सर्वाङ्गे स्नानीयं जलं समर्पयामि। पुनराचमनीयं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नानम्—

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वतीतु पञ्चधासोदेशेभवत्सरित् ॥३४/११॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु ।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वस्त्रम्—

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम्[1]—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥

---

१. यज्ञोपवीत दानेन सुरेभ्यो ब्राह्मणाय च ।
भवेद् विप्रश्चतुर्वेदी शुद्धवीर्यो न संशयः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

गन्धम् (चंदनम्)—

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्प्पतिः।
त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥ १२/९८ ॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धं समर्पयामि ।

अक्षताः—

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रियाऽअधूषत ।
अस्तोषतस्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रतेहरी॥ ३/८१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पमालाम्—

ॐ ओषधीः प्रति मोदद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्वः॥ १२/७७॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां समर्पयामि ।

दूर्वाङ्कुरान्[1]—

ॐ काण्डात्त्काण्डात्त्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्प्परि ।
एवानो दूर्व्वेप्प्रतनु सहस्त्रेणशतेनच ॥ १३/२०॥

---

१. अक्षतैर्नार्चयेद्विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम् ।
न दूर्वया यजेद्देवीं बिल्वपत्रैर्न भास्करम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान्मङ्गलप्रदान् ।
अनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥

श्री गणपतये नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ।

बिल्वपत्रम्[1]—

ॐ शिवोभवप्रजाब्भ्योमानुषीब्भ्यस्त्वमङ्गिरᳬ । माद्द्यावापृथिवीऽ अभिशोचीर्म्मान्तरिक्षम्माव्वनस्पतीन् ॥ ११/४५ ॥

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभै ।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण गणनायक ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि ।

सिंदूरम्—

ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेशूघनासोव्वातप्रमियᳬ पतयन्तियह्व्वाः । घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिᳬ पिन्वमानᳬ॥ १७/९५ ॥

१. पंकजं पंचरात्रं स्यात् दशरात्रं तु बिल्वकम् ।
एकादशाहं तुलसी नैव पर्यूषिता भवेत् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्यम्—

ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वाव्वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ꣳ सम्परिपातुविश्वतः ॥ २९/५१ ॥

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् ।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम् ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

सुगन्धितद्रव्यम्—

ॐ त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्त्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥ ३/६० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चम्पकाशोकवकुलमालतीमोगरादिभिः ।
वासितं स्निग्धताहेतु तैलं चारु प्रगृह्यताम् ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि ।

॥ अथ श्री गणेशाङ्ग पूजनम् ॥

गन्धाक्षत पुष्पादि के द्वारा भगवान् गणेश का अङ्ग पूजन करें ।

गं गणेश्वराय नमः पादौ पूजयामि ॥१॥
गं विघ्नराजाय नमः जानुनी पूजयामि ॥२॥
गं आखुवाहनाय नमः उरुं पूजयामि ॥३॥
गं हेरम्बाय नमः कटी पूजयामि ॥४॥
गं कामारिसूनवे नमः नाभिं पूजयामि ॥५॥
गं लम्बोदराय नमः उदरं पूजयामि ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गं गौरीसुताय नमः स्तनौ पूजयामि ॥७॥
गं गणनायकाय नमः हृदयं पूजयामि ॥८॥
गं स्थूलकण्ठायनमः कण्ठं पूजयामि ॥९॥
गं स्कन्दाग्रजाय नमः स्कन्धौ पूजयामि ॥१०॥
गं पाशहस्ताय नमः हस्तौ पूजयामि ॥११॥
गं गजवक्त्राय नमः वक्त्रं पूजयामि ॥१२॥
गं विघ्नहर्त्रे नमः ललाटं पूजयामि ॥१३॥
गं सर्वेश्वराय नमः शिरः पूजयामि ॥१४॥
गं गणाधिपाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥१५॥

धूपम्—

ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तन्धूर्व्वतंय्योऽस्म्मान्धूर्व्वतितन्धूर्व्वयं व्वयन्धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्नितमꣳ सस्नितमम्पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥१/८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम्—

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहासूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा । अग्निर्व्वर्च्चोर्ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहासूर्य्योव्वर्च्चोर्ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा । ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्ज्योतिः स्वाहा ॥३/९॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि । हस्तौ प्रक्षाल्य,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नैवेद्यम्—

ॐ अन्नपतेन्नस्य नोदेह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्रदातारन्तारिष ऽऊर्ज्जन्नो धेहिद्विपदे चतुष्पदे ॥११/८३॥

नैवेद्यं गृह्यतां देवं भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारो भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि जलं प्रक्षिप्य, प्राणाय स्वाहा । अपानाय स्वाहा । व्यानाय स्वाहा । समानाय स्वाहा । उदानाय स्वाहा । नैवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि । मध्ये पानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशनं समर्पयामि ।

करोद्वर्तनार्थे चन्दनम्—

ॐ अᳬशुनातेऽ अᳬशुः पृच्यतामपरुषापरुः ।
गन्धस्त्ते सोममवतु मदायरसोऽ अच्युतᳬ ॥२०/२७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करोद्वर्तनकं देव सुगन्धैः परिवासितैः ।
गृहीत्वा मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥१॥
चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् ।
करोद्वर्त्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥२॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्त्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि ।

ऋतुफलम्—

ॐ याः॒ फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः॑ ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॑ ॥$\frac{१२}{८९}$॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुफलानि समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ताम्बूलम्—

ॐ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत ।
व्वसन्तोस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मम ऽइध्मश्शरद्धविः ॥ ३१/१४ ॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलपत्रं पूगीफलं च समर्पयामि ।

दक्षिणाद्रव्यम्—

ॐ हिरण्यगर्ब्भश्समवर्त्तताग्ग्रेभूतस्यजातश्पतिरेक ऽआसीत् ।
सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्म्मैदेवायहविषाव्विधेम ॥ २३/१ ॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विशेषार्घ्यम्—

ताम्र पात्रे जलगन्धाक्षतफलपुष्पकुशाग्रदधिदुग्धसर्षपान्, द्रव्यञ्चादाय विशेषार्घ्यं दद्यात्—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥
अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा मम ।

श्री गणपतये नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

रूपं देहि जयं देहि सौभाग्यं देहि देवि मे ।
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥

श्री अम्बिकायै नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रार्थनां—

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥१॥
भक्तार्त्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥२॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥३॥

विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥४॥

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥५॥

"जलमादाय अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्" इति जलं क्षिपेत् ।

॥ इति श्री गणेशाम्बिकापूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ कलशस्थापनं पूजनञ्च ॥

सर्वप्रथम कलश पर रोली से स्वास्तिक बनाकर एवं उसके कण्ठ में मौली लपेटकर पूजक को अपनी बांयी ओर अष्टदल-कमल बनाकर उस पर सप्तधान्य, चावल अथवा गेहूँ रखकर उसके ऊपर कलश को स्थापित कर निम्नलिखित विधान से पूजन करें ।

भूमिं स्पृशेत्—

ॐ मही द्यौ॒ पृथिवी च नऽइमँ व्यज्ञम्मिमिक्षताम् ।
पिपृतान्नो भरीमभिः ॥८/३२॥

विश्वाधाराऽसि धरणी शेषनागोपरि स्थिता ।
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ (भूमि का स्पर्श करें)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धान्यप्रक्षेपः—

ॐ ओषधयꣳ समवदन्त सोमेन सहराज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि ॥ $\frac{१२}{९६}$ ॥

(पृथ्वी पर सप्तधान्य रखें)

कलशं स्थापयेत्—

ॐ आजिग्घ्र कलशं मह्य्या त्वा व्विशन्त्विन्दवꣳ । पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्त्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीपुनर्म्माविशताद्रयिः ॥ $\frac{८}{४२}$ ॥

हेमरूप्यादिसम्भूतं ताम्रजं सुदृढं नवम् ।
कलशं धौतकल्माषं छिद्रवर्णविवर्जितम् ॥

(सप्तधान्य पर कलश का स्थापन करें ।)

कलशे जलपूरणम्—

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्य ऽऋतसदन्न्यसिव्वरुणस्य ऽऋतसदनमसिव्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ $\frac{४}{३६}$ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जीवनं सर्वजीवानां पावनं पावनात्मकम् ।
बीजं सर्वौषधीनां च तज्जलं पूरयाम्यहम् ॥ (कलश में जल डालें)

गन्धप्रक्षेपः—

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्प्पतिः ।
त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्न्यक्ष्मादमुच्च्यत ॥१२/१८॥

केशरागरुकङ्कोलघनसारसमन्वितम् ।
मृगनाभियुतं गन्धं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में चन्दन या रोली डालें)

धान्यप्रक्षेपः—

ॐ धान्न्यमसिधिनुहि देवान्प्राणायत्त्वोदानायत्त्वाव्व्यानायत्त्वा । दीर्घामनुप्प्रसितिमायुषेधान्देवोवः सवितहिरण्ण्यपाणिᳬ प्प्रतिगृब्भ्णात्त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्त्वा महीनां पयोऽसि ॥१/२०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम् ।
निर्मिता ब्रह्मणा पूर्वं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में सप्तधान्य डालें)

सर्वौषधीप्रक्षेपः—

ॐ या ऽओषधीᳬं पूर्व्वा जातादेवेब्भ्यस्त्रियुगम्पुरा ।
मनैनुबब्भ्रूणामह ७ शतन्धामानिसप्तच ॥ $\frac{१२}{७५}$ ॥

ओषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः ।
दूर्वासर्षप-संयुक्ताः कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में सर्वोषधि डालें)

दूर्वाप्रक्षेपः—

ॐ काण्डात्त्काण्डात्त्प्ररोहन्ती परुषᳬं परुषस्प्परि ।
एवानो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥ $\frac{१३}{२०}$ ॥

दूर्वेह्यमृतसम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे ।
शतं पातकसंहन्त्री कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में दूर्वा डालें ।)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चपल्लवप्रक्षेपः—

ॐ अश्वत्त्थेवोनिषदनम्पर्ण्णेवोव्वसतिष्कृता ।
गोभाजऽइत्त्किलासथयत्त्सनवथपूरुषम् ॥३५/४॥

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः ।
पञ्चैतान् पल्लवानस्मिन् कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥

(कलश में पञ्चपल्लव अथवा आम के पत्ते डालें)

सप्तमृदांप्रक्षेपः—

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्क्षरानिवेशनी ।
यच्छानᳫं शर्म्मसप्प्रथाᳫं ॥३६/१३॥

अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमाद्ध्रदात् ।
राजस्थानाच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ॥

(कलश में सप्तमृत्तिका या मिट्टी डालें)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

फलप्रक्षेपः—

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नोमुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥१२/८९॥

पूगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पुण्यदं नृणाम् ।
हारकं पापपुञ्जानां कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में सुपारी डालें)

पञ्चरत्नप्रक्षेपः—

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्व्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानिदाशुषे ॥११/२५॥

कनकं कुलिशं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम् ।
एतानि पञ्चरत्नानि कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में पञ्चरत्न डालें ।)

हिरण्यप्रक्षेपः—

ॐ हिरण्ण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्यजातः पतिरेक ऽआसीत् ।
सदाधारपृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्म्मैदेवायहविषाव्विधेम ॥२३/१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदं कलशे प्रक्षिपाम्यहम् ॥ (कलश में दक्षिणा डालें ।)

रक्तसूत्रेण वस्त्रेण वा कलशं वेष्टयेत्—

ॐ सुजातोज्ज्योतिषा सहशर्म्मव्वरूथमासदत्त्स्वः ।
व्वासोऽ अग्ग्नेव्विश्ववरूपꣳ संव्व्ययस्वव्विभावसो ॥११/४०॥

सूत्रं कर्पाससम्भूतं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।
येन बद्धं जगत्सर्वं तेनेमं वेष्टयाम्यहम् ॥

(कलश पर लालवस्त्र अथवा मौली लपेट दें ।)

कलशस्योपरि पूर्णपात्रं न्यसेत्—

ॐ पूर्ण्णादर्व्वि परापतसुपूर्ण्णा पुनरापत ।
व्वस्नेव व्विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जꣳ शतक्क्रतो ॥३/४९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पिधानं सर्ववस्तूनां सर्वकार्यार्थसाधनम् ।
सम्पूर्णःकलशो येन पात्रं तत्कलशोपरि ॥ (कलश पर पूर्णपात्र रखें ।)

पूर्णपात्रोपरि श्रीफलं नारिकेलं वा न्यसेत्–

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ ३१/२२ ॥

(पूर्णपात्र पर नारियल रखें ।)

वरुणमावाहयेत्–

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः।
अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳ समानऽ आयुꣳ प्रमोषीꣳ ॥ १८/४९ ॥

भगवन्वरुणागच्छ त्वमस्मिन् कलशे प्रभो ! ।
कुर्वेऽत्रैव प्रतिष्ठां ते जलानां शुद्धिहेतवे ॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ अपांपतये वरुणाय नमः । इति पञ्चोपचारैर्वरुणं सम्पूज्य ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कलशस्थितदेवानां नदीनां तीर्थानां च आवाहनम्—

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः ।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते ॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूलेत्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥
कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी ।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः ।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

(उपरोक्त श्लोकों का उच्चारण कर अक्षत छोड़ें ।)

अक्षतान् गृहीत्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्–

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञ७ समिमन्दधातु । व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ ॥$\frac{२}{१३}$॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु । ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः । विष्ण्वाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः ।

(कलश पर अक्षत छोड़कर स्पर्श करें ।)

कलशस्य चतुर्दिक्षु चतुर्वेदान्पूजयेत्–

पूर्वे–**ऋग्वेदाय नमः** । दक्षिणे–**यजुर्वेदाय नमः** । पश्चिमे–**सामवेदाय**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः । उत्तरे–**अथर्ववेदाय नमः** । कलशमध्ये **अपांपतये वरुणाय नमः**।

(कलश के चारों ओर तथा मध्य में अक्षत छोड़ें ।)

षोडशोपचारैः पूजनम् कुर्यात्–

आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि । पादयोः पाद्यं समर्पयामि । हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि । पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । स्नानाङ्गाचमनं समर्पयामि । वस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । आचमनं समर्पयामि । उपवस्त्रं समर्पयामि । गन्धं समर्पयामि । अक्षतान् समर्पयामि । पुष्पमालां समर्पयामि । नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि । धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । हस्त-प्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि।

मध्ये पानीयम् उत्तरापोशनं च समर्पयामि । ताम्बूलं समर्पयामि । पूगीफलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

कलश–प्रार्थना–

देवदानव-संवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ ! विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वत्तोयं सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥२॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥३॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव !।
सान्निध्यं कुरु मे देव ! प्रसन्नो भव सर्वदा ॥४॥

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय
सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय
जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥५॥

पाशपाणे ! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक !।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥६॥

अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम ।

॥ इति कलश पूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ षोडशमातृका पूजनम् ॥

पूजक के दाहिने हाथ की ओर लाल वस्त्र पर १६ (सोलह) कोष्ठों में गेहूं अथवा चावल रखकर क्रम से बनाये गये मातृका मण्डल पर **पश्चिम से पूर्व की ओर** मातृकाओं का निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा आवाहन कर उन्हें विराजमान करें ।

गणपतिम्—

ॐ गणानान्त्वा गणपति छ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति छ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति छ हवामहे व्वसोमम । आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥२३/१९॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।

गौरीम्—

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः॥३/६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हैमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननी गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि ।

पद्माम्—

ॐ हिरण्यरूपा ऽउषसोव्विरोक ऽउभाविन्द्रा ऽउदिथᳪ सूर्य्यश्च।
आरोहतंव्वरुण मित्त्रगर्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिञ्च मित्रोसिव्वरुणोसि॥ $\frac{१०}{१६}$॥

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम् ।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि स्थापयामि ।

शचीम्—

ॐ निवेशनᳪ सङ्गमनो व्वसूनां व्विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिᳪ।
देवऽइवसवितासत्त्यधर्म्मेन्द्रोनतस्त्थौसमरेपथीनाम् ॥$\frac{१२}{६६}$॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिव्यरूपां विशालाक्षी शुचि-कुण्डल-धारिणीम् ।
रक्तमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि ।

मेधाम्—

मेधाम्मेव्वरुणोददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्श्च व्वायुश्श्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ॥ ३२/१५ ॥

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम् ।
बुद्धिप्रबोधिनी सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नम, मेधामावाहयामि स्थापयामि ।

सावित्रीम्—

ॐ सविताक्त्वा सवानाᳫ सुवतामग्निर्गृहपतीनाᳫ सोमो व्वनस्पतीनाम् । बृहस्प्पतिर्व्वाच ऽइन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुब्भ्यो मित्रः सत्त्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥ ९/३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम् ।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि ।

विजयाम्—

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ २ उत । अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥$\frac{१६}{१०}$॥

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम् ।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि ।

जयाम्—

ॐ बह्वीनाम्पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च्च सर्व्वाः पृष्ठेनिनद्धो जयतिप्रसूतः ॥$\frac{२९}{४२}$॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम् ।
त्रैलोक्यवन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि ।

देवसेनाम्—

ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽ एतुसोमः ।
देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्ग्रम् ॥१७/४०॥

मयूरवाहनां देवीं खड्ग-शक्ति-धनुर्धराम् ।
आवाहयेद् देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि ।

स्वधाम्—

ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः
स्वधानमः प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधानमः । अक्षन्पितरोमीमदन्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पितरोतीतृपन्त पितरꣳ पितरꣳ शुन्धद्ध्वम् ॥१९/३६॥

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता ।
पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि ।

स्वाहाम्—

ॐ स्वाहाप्प्राणेब्भ्यꣳ साधिपतिकेब्भ्यꣳ। पृथिव्व्यैस्वाहाग्नयेस्वाहान्त रिक्षायस्वाहा व्वायवेस्वाहा । दिवेस्वाहा सूर्य्यायस्वाहा ॥३९/१॥

हविर्गृवा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति ।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ।

मातृः—

ॐ आपोऽअस्म्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्प्वः पुनन्तु । व्विश्श्वꣳ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हिरिप्प्रम्प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यꣳ शुचिरापूत ऽएमि । दीक्षातपसोस्त्तनूरसि तान्त्वा शिवाꣳ शग्ग्माम्परिदधे भदद्रं व्वर्णम्पुष्य्यन् ॥$\frac{४}{२}$॥

सर्वकल्याण रूपिण्यो शकलाः लोकपूजिताः ।
आवाहयाम्यहं मातृः वरदा दिव्यभूषणाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः, मातृः आवाहयामि स्थापयामि ।

लोकमातृः—

ॐ रयिश्श्च मे रायश्श्च मे पुष्ट्टञ्च मे पुष्टिश्श्च मे व्विभु च मेप्प्रभु च मे पूर्ण्णञ्च मे पूर्ण्णतरञ्च मे कुयवञ्च मेऽक्षितञ्च मेऽन्नञ्च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥$\frac{१८}{१०}$॥

आवाहयेल्लोकमातृर्जयन्तीप्रमुखाः शुभाः ।
नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धृतिम्—

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ।
यस्म्मान्नऽऋते किञ्चनकर्म्मक्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥३४/३॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम् ।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि ।

पुष्टिम्—

ॐ अङ्गान्न्यात्क्मन्भिषजा तदश्विनात्क्मानमङ्गैꣳ समधात्त्सरस्वती ।
इन्द्रस्यरूपꣳ शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतन्दधानाꣳ ॥१९/१३॥

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेहप्रभवैर्नवैः ।
शाकैः फलैर्जलैरत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुष्टिम्—

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोषकारिणीम् ।
प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि, स्थापयामि ।

आत्मनः कुलदेवताम्—

ॐ प्राणायस्वाहापानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहा चक्षुषेस्वाहा श्श्रोत्राय-स्वाहा व्वाचेस्वाहा मनसेस्वाहा ॥२२/२३॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे ।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि, स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणप्रतिष्ठापनम्—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं य्यज्ञꣳ समिमन्दधातु । व्विश्वे देवासऽइहमादयन्तामोँ३म्प्रतिष्ठ ॥२/१३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिसहिताः श्रीगौर्यादिषोडशमातरः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत । श्रीसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य, प्रार्थयेत्—

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम ।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः ॥

पुष्पाञ्जलिः—

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः ।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हरात्मज चतुर्बाहो वारणास्य महोदर ।
प्रसन्नो भव मह्यं त्वं गौरीपुत्र नमोऽस्तु ते ॥२॥

ब्रह्माणी कमलेन्दुसौम्यवदना माहेश्वरी लालया,
कौमारी रिपुदर्प्यनाशनकरी चक्रायुधा वैष्णवी ।
वाराही घनघोरघर्घरमुखी चैन्द्री च वज्रायुधा,
चामुण्डा गणनाथरुद्रसहिता रक्षन्तु नो मातरः ॥३॥

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक लता ।
स्फुरत्कांची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी,
भजामिस्त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम् ॥४॥

जलमादाय अनया पूजया गणपतिसहित-गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम ।

॥ इति षोडशमातृका पूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ सप्तघृतमातृका पूजनम् ॥

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥

सप्तघृतमातृका स्वरूपम्

श्वेत वस्त्र से आच्छादित पीठ पर श्रीः लिखें तथा नीचे सिन्दूर अथवा रोली से क्रमशः समानता में एक के नीचे दो उसके नीचे तीन ऐसे ही सात बिन्दु बना लें । इसके बाद मन्त्रोच्चारण पूर्वक सातों बिन्दुओं पर घी की धारा दें तथा अन्त में उन सातों बिन्दुओं को गुड़ से मिलाकर उनका पृथक्-२ पूजन करें।

श्रियम्—

ॐ मनसꣳ काममाकूतिं व्वाचꣳ सत्त्यमशीय ।
पशूनाꣳ रूपमन्नस्यरसोयशꣳ श्रीꣳ श्रयताम्मयि स्वाहा॥ ३९/४ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि स्थापयामि ॥

(पहली बिन्दु पर अक्षत छोड़कर "श्री" का आवाहन करें।)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मीम्—

ॐ श्रीश्च्च ते लक्ष्मीश्च्च पत्क्न्यावहोरात्रे पाश्र्वे नक्क्षत्राणि रूप-
मश्क्विनौ व्व्यात्तम्। इष्ष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्म ऽइषाण ॥ $\frac{३१}{२२}$ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ।

(दूसरी बिन्दु पंक्ति पर अक्षत छोड़कर लक्ष्मी का आवाहन करें।)

धृतिम्—

ॐ भद्द्रङ्कर्ण्णेभिः श्शृणुयाम देवा भद्द्रम्पश्श्येमाक्क्षभिर्ज्जत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्ष्टुवाॅ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितँय्यदायुः ॥ $\frac{२५}{२१}$ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि ।

(तीसरी बिन्दु पंक्ति पर अक्षत छोड़कर धृति का आवाहन करें ।)

मेधाम्—

ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्ग्निः प्प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च्च व्वायुश्च्च मेधान्धाता दधातु मे स्वाहा ॥ $\frac{३२}{१५}$ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि ।

(चौथी बिन्दु पंक्ति पर अक्षत छोड़कर मेधा का आवाहन करें ।)

स्वाहाम्—

ॐ प्राणायस्वाहापानायस्वाहाव्व्यानायस्वाहाचक्षुषेस्वाहा श्श्रोत्राय-स्वाहाव्वाचेस्वाहामनसेस्वाहा ॥ २२/२३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ।

(पाँचवी बिन्दु पंक्ति पर अक्षत छोड़कर स्वाहा का आवाहन करें ।)

प्रज्ञाम्—

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः । पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः ॥ ३/६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि ।

(छठी बिन्दु पंक्ति पर अक्षत छोड़कर प्रज्ञा का आवाहन करें ।)

सरस्वतीम्—

ॐ पावकानꣳ सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञं व्वष्टुधियावसुः ॥ २०/८४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि ।

(सातवीं बिन्दु पंक्ति पर अक्षत छोड़कर सरस्वती का आवाहन करें ।)

वसोर्धाराः—

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारंव्वसोः पवित्रमसिसहस्त्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा ॥१/३॥

गुडेनैकीकरणम्—

ॐ कामधुक्षः ।

प्राण-प्रतिष्ठापनम्—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञः समिमन्दधातु । व्विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोँ३म्प्रतिष्ठ ॥२/१३॥

वसोधारा देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥

(इस मन्त्र से प्राण-प्रतिष्ठा कर षोडशोपचार पूजन करें ।)

श्रीसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रार्थनां—

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैगजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥१॥
यदङ्गत्वेन भो देव्यः ! पूजिता विधिमार्गतः ।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥२॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥३॥

अनया पूजया श्रियादिसप्तघृतमातरः प्रीयन्तां न मम ।

॥ इति सप्तघृतमातृका पूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ नवग्रहादिदेवानां स्थापनं पूजनञ्च ॥

वामहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा दक्षहस्तेन तत्तत्स्थाने आदित्यादिदेवतानां आवाहनं कुर्यात् । बायें हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से प्रत्येक मन्त्र के बाद रेखाङ्कितग्रहों के स्थान पर अक्षत छोड़ें ।

सूर्यम् (मण्डल के मध्य में)—

ॐ आकृष्णेनरजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ $\frac{३३}{४३}$॥

जपा-कुसुम-सङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य ! इहागच्छ इहतिष्ठ, सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चन्द्रम् (अग्निकोण में)—

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्नꣳ सुवद्ध्वम्महते क्षत्रायमहते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश-ऽएष वोमी राजासोमोस्म्माकम्ब्राह्मणानाꣳ राजा ॥ ९/४० ॥

दधि-शङ्ख-तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ इह तिष्ठ, सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि ।

भौमम् (दक्षिण में)—

ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्व्याऽअयम् । अपाꣳ रेताꣳ सिजिन्वति ॥ १३/१४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेज समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि ।

बुधम् (ईशान कोण में)—

ॐ उद्‌बुद्‌ध्यस्वाग्ग्ने प्रतिजागृहि त्त्वमिष्ट्टापूर्त्तेसᳬ सृजेथामयञ्च । अस्मिन्त्सधस्त्थे अद्‌ध्युत्तरस्मिन्न्विश्श्वेदेवा यजमानश्चसीदत ॥१५/५४॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र हरितवर्ण भो बुध ! इहागच्छ इहतिष्ठ बुधायनमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बृहस्पतिम् (उत्तर में)—

ॐ बृहस्प्पतेऽअतियदर्थ्योऽअर्हाद्द्युमद्विभातिक्क्रतुमज्जनेषु। यद्दीद-यच्छवसऽऋतप्रजाततदस्म्मासुद्द्रविणन्धेहिचित्रम् ॥$\frac{२६}{३}$॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम् ।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते । इहागच्छ इहतिष्ठ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि ।

शुक्रम् (पूर्व में)—

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसम्ब्रह्मणाव्व्यपिबत्त्क्षत्रम्प्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपानꣳ शुक्क्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्प्पयोमृतम्मधु ॥$\frac{१९}{७५}$॥

हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि ।

शनिम् (पश्चिम में)—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शँय्योरभिस्त्रवन्तुनः ॥$\frac{३६}{१२}$॥

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छाया मार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहागच्छ इहतिष्ठ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि ॥

राहुम् (नैर्ऋत्य कोण में)—

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कयाशचिष्ठया व्वृता ॥$\frac{२७}{३९}$॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव पैठिनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो । इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि ।

केतुम् (वायव्य कोण में)—

ॐ केतुङ्कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥२९/३७॥

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो । इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः केतुमावाहयामि स्थापयामि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अधिदेवतानां स्थापनम् ॥

शिवः शिवा गुहो विष्णुर्ब्रह्मेन्द्रयमकालकाः ।
चित्रगुप्तोऽथ भान्वादिदक्षिणे चाऽधिदेवताः ॥

विशेष पूजन, यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि में नवग्रहों की स्थापना के उपरान्त सूर्य आदि ग्रहों के दाहिने भाग में निम्नलिखित क्रमानुसार अधिदेवताओं का अधोलिखित मन्त्रों से ग्रहमण्डल के दक्षिण भाग में अक्षत छोड़ते हुए आवाहन एवं स्थापन करें ।

ईश्वरम् (सूर्य के दायें भाग में)—

ॐ त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्त्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥३/६०॥

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम् ।
आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छ इहतिष्ठ ईश्वराय नमः ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उमाम् (चन्द्रमा के दायें भाग में)—

ॐ श्रीश्श्चतेलक्ष्मीश्श्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्र्वे नक्क्षत्राणि रूपमश्श्विनौ व्व्यात्तम् । इष्ण्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥३१/२२॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छ इहतिष्ठ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि।

स्कन्दम् (मंगल के दायें भाग में)—

ॐ यदक्क्रन्दः प्प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्त्समुद्द्रादुत वा पुरीषात् । श्श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्त्यम्महि जातन्ते ऽअर्व्वन् ॥२९/१२॥

रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम् ।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्देहागच्छ इहतिष्ठ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विष्णुम् (बुध के दायें भाग में)—

ॐ व्विष्णोरराटमसिव्विष्णोॱ श्नप्त्रेस्त्थोव्विष्णोॱ स्यूरसिव्विष्णो-ध्रुवोसि । व्वैष्णवमसि व्विष्णवेत्त्वा ॥ ५/२१ ॥

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम् ।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ।

ब्रह्माणम् (बृहस्पति के दायें भाग में)—

ॐ आब्ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योतिव्व्याधी महारथो जायतान्दोग्ग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिॱ पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्यव्वीरो जायता-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्निकामे निकामे नᳪ पर्ज्जन्न्योव्वर्षतु फलवत्योनऽओषधयᳪ पच्यन्तांय्योग-
क्षेमोनः कल्प्पताम् ॥$\frac{२२}{२२}$॥

कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम् ।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणेनमः । ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि

इन्द्रम् (शुक्र के दायें भाग में)—

ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिᳪ सोमम्पिबव्वृत्रहा शूरव्विद्वान् ।
जहिशत्रूँ १ रपमृधोनुदस्वाथाभयङ्कृणुहि व्विश्श्वतोनᳪ ॥$\frac{७}{३७}$॥

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम् ।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यमम् (शनि के दायें भाग में)—

ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेपितृमतेस्वाहा । स्वाहाघर्म्मायस्वाहाघर्म्मः पित्रे ॥$\frac{३८}{९}$॥

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम् ।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इहतिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

कालम् (राहु के दायें भाग में)—

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्त्वाक्षित्त्याऽउन्नयामि । समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥$\frac{६}{२८}$॥

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने-दिने ।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालेहागच्छ इहतिष्ठ कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चित्रगुप्तम् (केतु के दायें भाग में)—

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ।

धर्मराजसभासंस्थं कृताऽकृत-विवेकिनम् ।
आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्तेहागच्छ इहतिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि ।

॥ प्रत्यधिदेवतानां स्थापनम् ॥

अग्निरापो धरा विष्णुः शक्रेन्द्राणी पितामहाः ।
पन्नगाकः क्रमाद्वामे ग्रहप्रत्यधिदेवताः ॥

नवग्रह मण्डल पर अधिदेवताओं की स्थापना के उपरान्त नवग्रहों के बायें भाग में निम्नलिखित प्रत्येक मन्त्र उच्चारण करते हुए क्रमानुसार अक्षत छोड़ते हुए प्रत्यधिदेवताओं का आवाहन एवं स्थापन करें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्निम् (सूर्य के बायें भाग में)—

ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्व्यवाहमुपब्ब्रुवे । देवाँ२ आसादयादिह॥$\frac{२२}{१७}$॥

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासन-स्थितम् ।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इहतिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥

अपः (चन्द्रमा के बायें भाग में)—

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे॥$\frac{११}{५०}$॥

आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकराः शुभाः ।
ओषध्याप्यायनकरा अपामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अप इहागच्छत इहतिष्ठत अद्भ्यो नमः अपः आवाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पृथिवीम् (मंगल के बायें भाग में)—

ॐ स्योना पृथिवि नोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः ॥$\frac{३६}{१३}$॥

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम् ।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवि इहागच्छ इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि ।

विष्णुम् (बुध के बायें भाग में)—

ॐ इदंविष्णुर्व्विचक्क्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्यपाꣳ सुरे स्वाहा ॥$\frac{५}{१५}$॥

शङ्ख-चक्र गदापद्महस्तं गरुडवाहनम् ।
किरीट-कुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन्द्रम् (बृहस्पति के बायें भाग में)—

ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतुसोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ $\frac{१७}{४०}$ ॥

ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम् ।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ।

इन्द्राणीम् (शुक्र के बायें भाग में)—

ॐ अदित्त्यैरास्न्नासीन्द्राण्या ऽउष्ष्णीषः । पूषासि घर्म्माय दीष्व ॥ $\frac{३८}{३}$ ॥

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम् ।
नाना ऽलङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छेह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रजापतिम् (शनि के बायें भाग में)—

ॐ प्रजापतेनत्त्वदेतान्न्यन्न्यो व्विश्श्वारूपाणिपरिताबभूव । यत्त्कामास्त्ते जुहुमस्त्तन्नो ऽअस्त्तु व्वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम् ॥२३/६५॥

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम् ।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छ इहतिष्ठ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि ।

पन्नगान् (राहु के बायें भाग में)—

ॐ नमोस्त्तु सर्प्पेब्भ्योयेकेचपृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षेयेदिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः ॥१३/६॥

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान् ।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्प इहागच्छत इहतिष्ठत सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्थापयामि ।

ब्रह्माणम् (केतु के बायें भाग में)—

ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमम्पुरस्त्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः । स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य व्विष्ठाः सतश्श्च योनिमसतश्श्चव्विवः ॥१३/३॥

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम् ।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमाहयामि स्थापयामि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ पञ्चलोकपालस्थापनम् ॥

गणपतिम् (राहोरुत्तरे)—

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम । आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥$\frac{२३}{१९}$॥

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छेह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ।

दुर्गाम् (शनेरुत्तरे)—

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥$\frac{२३}{१८}$॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे ।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छेह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ।

वायुम् (रवेरुत्तरपार्श्वे)—

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्त्वान्त्सोमपीतये॥ $\frac{२७}{३२}$॥

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम् ।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

आकाशम् (राहोर्दक्षिणे)—

ॐ घृतङ्घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ $\frac{६}{१९}$॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम् ।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छ इहतिष्ठ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि ।

अश्विनौ (केतुदक्षिणे)—

ॐ याावाङ्कशा मधुमत्त्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ॥११॥

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छतां इहतिष्ठताम्, अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ वास्तोष्पतेः क्षेत्राधिपतेर्दशदिक्पालानां च स्थापनम् ॥

वास्तोष्पतिम् (गुरूत्तरे)—

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।

वास्तोष्पतिं विदिक्कार्यं भूशय्याभिरतं प्रभुम् ।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छ इहतिष्ठ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि ।

क्षेत्राधिपतिम् (गुरोरुत्तरे)—

ॐ नहिस्प्पशमविदन्नन्न्यमस्म्माद्वैश्श्वानरात्त्पुरऽएतारमग्ग्नेः । एमेनमवृधन्नमृता ऽ अमर्त्यं व्वैश्श्वानरङ्क्षैत्रजित्त्यायदेवाः ॥३३/६०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये इहागच्छ इहतिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपति-मावाहयामि स्थापयामि ।

इन्द्रम् (मण्डलाद्बहिः पूर्वस्याम्)—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र७ हवेहवे सुहव६ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र७ स्वस्ति नो मघवा धात्त्विन्द्रः ॥$\frac{२०}{५०}$॥

इन्द्रं सुरपतिं श्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम् ।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

अग्निम् (मण्डलाद्बहिः आग्नेय्याम्)—

ॐ त्वन्नोऽअग्ग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्नवश्च्चव्वन्द्य । त्रातातोकस्यतनयेगवामस्यनिमेष६ रक्क्षमाणस्त्तवव्व्रते ॥$\frac{३४}{१३}$॥

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम् ।
षण्नेत्रं च चतुः श्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इहतिष्ठ अग्नये नमः अग्निमावाह्यामि स्थापयामि।

यमम् (मण्डलाद्बहिः दक्षिणस्याम्)—

ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमतेस्वाहा । स्वाहाघर्म्मायस्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥३८/९॥

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमेहागच्छ इहतिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि ।

निर्ऋतिम् (मण्डलाद्बहिः नैर्ऋत्याम्)—

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्त्यामन्विहि तरक्करस्य । अन्यमस्मदिच्छसात ऽ इत्त्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥१२/६२॥

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम् ।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छ इहतिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ।

वरुणम् (ग्रहमण्डलाद्बहिः पश्चिमायाम्)—

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳ समान ऽआयुः प्रमोषीः ॥१८/४९॥

शुद्ध-स्फटिक सङ्काशं जलेशं यादशां पतिम् ।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

वायुम् (मण्डलाद्बहिः वायव्याम्)—

ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरद्ध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदानः ॥२७/२८॥

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम् ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

सोमम् (मण्डलाद्बहिः उत्तरस्याम्)—

ॐ व्वयꣳ सोमव्व्रते तवमनस्तनूषु बिब्भ्रतꣳ।
प्रजावन्तꣳ सचेमहि ॥$\frac{३}{८६}$॥

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम् ।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमेहागच्छ इहतिष्ठ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि ।

ईशानम् (ग्रहमण्डलाद्बहिः ईशान्याम्)—

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसे हूमहे व्वयम् ।
पूषानोयथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धꣳ स्वस्तये ॥$\frac{२५}{१८}$॥

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम् ।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानेहागच्छ इहतिष्ठ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्माणम् (ईशानपूर्वयोर्मध्ये)—

ॐ अस्म्मेरुदद्र्ामेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्त्ये भरहूतौ सजोषाꣳ। यꣳ
शꣳ सतेस्तुवते धायिपज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्म्माँ २। ऽअवन्तुदेवाः॥ ३३/८०॥

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

अनन्तम् (नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये)—

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्क्षरानिवेशनी।
यच्छानꣳ शर्म्मसप्प्रथाꣳ॥ ३६/१३॥

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तइहागच्छ इहतिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्राणप्रतिष्ठा (हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा) हाथ में चावल लेकर प्राणप्रतिष्ठा करें–

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्स्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञꣳ समिमन्दधातु । विश्ववेदेवास ऽइहमादयन्तामोँ ३म्प्रतिष्ठ ॥२/१३॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिनवग्रहाः साङ्गाः सवाहनाः सपरिवारा अधिदेवताप्रत्यधिदेवताविनायकादिपञ्चलोकपालवास्तोष्पतिक्षेत्राधिपतीन्द्रादिदशदिक्पालसहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु । इत्यक्षतान् क्षिपेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाममन्त्राः

नवग्रहाः	अधिदेवताः	प्रत्यधिदेवताः	पञ्चलोकपालाः
ॐ आदित्याय नमः।	ॐ ईश्वराय नमः।	ॐ अग्नये नमः ।	ॐ विनायकाय नमः।
ॐ सोमाय नमः।	ॐ उमायै नमः।	ॐ अद्भ्यो नमः ।	ॐ दुर्गायै नमः ।
ॐ भौमाय नमः।	ॐ स्कन्दाय नमः।	ॐ भूम्यै नमः ।	ॐ वायवे नमः ।
ॐ बुधाय नमः।	ॐ विष्णवे नमः।	ॐ विष्णवे नमः ।	ॐ आकाशाय नमः।
ॐ बृहस्पतये नमः।	ॐ ब्रह्मणे नमः।	ॐ इन्द्राय नमः ।	ॐ अश्विभ्यां नमः।
ॐ शुक्राय नमः।	ॐ इन्द्राय नमः।	ॐ इन्द्राण्यै नमः ।	
ॐ शनैश्चराय नमः।	ॐ यमाय नमः।	ॐ प्रजापतये नमः।	**वास्तु-क्षेत्रपाल**
ॐ राहवे नमः।	ॐ कालाय नमः।	ॐ सर्पेभ्यो नमः ।	ॐ वास्तोष्पतये नमः।
ॐ केतवे नमः।	ॐ चित्रगुप्ताय नमः।	ॐ ब्रह्मणे नमः ।	ॐ क्षेत्राधिपतये नमः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशदिक्पालाः

ॐ इन्द्राय नमः । ॐ अग्नये नमः । ॐ यमाय नमः । ॐ निर्ऋतये नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ कुबेराय नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ अनन्ताय नमः ॥१०॥ कलशे ॐ वरुणाय नमः ।

इति नाममन्त्रैर्वा आवाहनासनपाद्यार्घस्नानाचमनवस्त्रयज्ञोपवीतगन्धाक्षतपुष्प-धूपदीपनैवेद्यफलताम्बूलभूषणनीरजनान्तोपचारैर्यथासम्भवं सम्पूजयेत् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-विनायकादिपञ्चलोकपाल-वास्तोष्पति-क्षेत्राधिपतीन्द्रादि-दशादिक्पालसहितेभ्यो नवग्रहेभ्यो नमः । **पूजनम्**—आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि । पादयोः पाद्यं समर्पयामि । हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि । सर्वाङ्गे स्नानं समर्पयामि । वस्त्रं समर्पयामि । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । गन्धं समर्पयामि । अक्षतं समर्पयामि । पुष्पं समर्पयामि । दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि । सुगन्धितद्रव्यंसमर्पयामि । धूपमाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं निवेदयामि। हस्तप्रक्षालनम्। आचमनम् । फलम् । ताम्बूलम् । दक्षिणाद्रव्यम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्पाञ्जलिः—

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु ॥१॥

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः
सद्बुद्धिञ्च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः ।
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिम्
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः ॥२॥

आयुश्च वित्तञ्च तथा सुखं च धर्मार्थलाभौ बहुपुत्रतां च ।
शत्रुक्षयं राजसु पूज्यतां च तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु ॥३॥

जलं गृहीत्वा—ॐ अनेन नवग्रहमण्डलस्थसूर्यादिदेवानां पूजनेन
ग्रहमण्डलस्थाः सर्वे सूर्यादिदेवताः प्रीयन्तां न मम ।

॥ इति नवग्रहादिदेवानां पूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री यन्त्र की अधिष्ठात्री देवी

श्रीराजराजेश्वरी महात्रिपुरसुन्दरी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

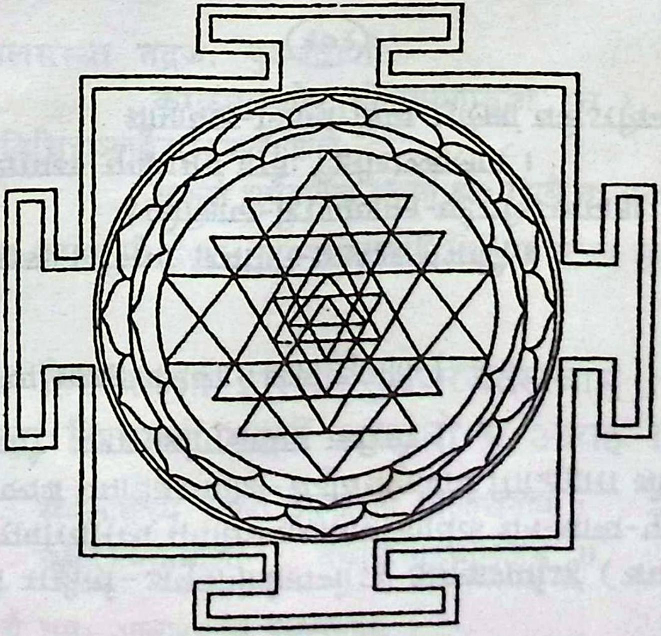

श्री यन्त्रराजः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ श्रीमहालक्ष्मी पूजनम् ॥

सङ्कल्पः—

देशकालौ सङ्कीर्त्य—अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वविधबाधानिवृत्तिपूर्वकं धन-धान्य-पुत्र-पौत्र-दीर्घायु-रारोग्यैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थं धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीमहालक्ष्मीदेव्याः प्रसन्नार्थं यथोपचारैः महालक्ष्मीपूजनमहं करिष्ये ।

इति सङ्कल्प्य महालक्ष्मीदेव्याः ध्यानं कुर्यात् ।

ध्यानम्—

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्तोत्क्षिप्त-हिरण्मयामृत-घटैराषिञ्च्यमानां श्रियम् ॥
बिभ्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम् ।
क्षौमाबद्ध-नितम्ब-बिम्ब-ललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा
करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च ।
मणिमुकुटविचित्राऽलङ्कृताऽऽकल्पजालैः
सकल भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ॥२॥

इति ध्यात्वा महालक्ष्मी देव्याः षोडशोपचारादि विधिना पूजनं कुर्यात् ।

आवाहनम्—

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥

सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम् ।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणप्रतिष्ठापनम्—

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञꣳ समिमन्दधातु । व्विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामोँ३म्प्रतिष्ठ ॥$\frac{२}{१३}$॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः प्राणप्रतिष्ठापयामि ।

आसनम्—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥

तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः आसनं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाद्यम्—

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्[1] ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥

गङ्गादितीर्थसमुद्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तु ते ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम्—

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥

अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम् ।
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि ।

---

१. पाठान्तर – प्रबोधिनीम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचमनम्—

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं[१] प्रपद्ये ऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥

विद्याधरीं महालक्ष्मीं पद्माक्षीं पद्मलोचनाम् ।
सर्वैश्वर्यप्रदां देवीमाचम्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः आचमनं समर्पयामि ।

स्नानम्—

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मा यान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः ।
स्नानं कुरुष्व देवेशि ! सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः स्नानं समर्पयामि ।

---

१. पाठान्तर – शरणं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चामृतस्नानम्—

ॐ पञ्चनद्द्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वतीतु पञ्चधासोदेशे भवत्त्सरित् ॥ ३४/११ ॥

पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधि घृतं मधु ।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानम्—

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त्त ऽआश्विनाः । श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्त्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभो रूपाः पार्ज्जन्न्याः ॥ २४/३ ॥

तोयं तव महादेवि ! कर्पूरागरुवासितम् ।
तीर्थेभ्यः सुसमानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अभिषेक[1]:—

श्री सूक्त का पाठ करते हुए श्री महालक्ष्मी की प्रतिमा व यन्त्र पर जल, दुग्ध, मधु इत्यादि के द्वारा अभिषेक करें ।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥१॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्[2] ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥४॥

---

१. शिवं गवय श्रृंगेण केशवं शङ्ख वारिणा ।
विघ्नेशं ताम्रपात्रेण स्वर्णेन जगदम्बिकाम् ॥

२. पाठान्तर – प्रमोदिनीम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्त्व वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या ऽअलक्ष्मीः ॥६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥१४॥
तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥ (ऋग्वेद, परिशिष्ट भाग)

ॐ श्रीदेव्यै नमः, महाभिषेकस्नानं समर्पयामि । अभिषेकान्ते स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वस्त्रम्—

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥

देहसौन्दर्यबीजं च सदा शोभाविवर्धनम् ।
कार्पासजं च कृमिजं वसनं देवि गृह्यताम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि ।

उपवस्त्रम् (कञ्चुकी)—

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥

मुक्ता-रत्नसुवर्णैश्च रचितां चारु भासुरम् ।
कञ्चुकं नीलवर्णं च गृहाण परमेश्वरि ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः उपवस्त्रं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मधुपर्कम्—

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यम् । तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ॥

परमैश्वर्यसम्पन्ना वरदे भक्तवत्सले ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वर देवि नमोऽस्तु ते ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि । मधुपर्कान्ते स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम्[1]—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

स्वर्णतन्तुसमायुक्तं पवित्रं दत्तमुत्तमम् ।
विष्णुप्रिये गृहाणेदमुपवीतं सुशोभनम् ॥

---

१. नैव स्त्री न पुमानेश न चैवाऽयं नपुंसकः।
यद्यत् शरीर माधत्ते तेन-तेन स रक्ष्यते ॥ (श्वेताश्वतरोपनिषद्)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

आभूषणम्—

ॐ युवन्तमिन्द्रापर्व्वता पुरोयुधायोनः पृतन्न्यादपतन्तमिद्धतं व्वज्र्रेण- तन्तमिद्धतम् । दूरेचत्तायच्छन्त्सद्‌गहनँय्यदिनक्षत् ॥ ८/५३ ॥

हार-कङ्कण-केयूर-मेखला-कुण्डलादिभिः ।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः आभूषणं समर्पयामि ।

गन्धम्—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥

श्रीखण्डागरुकर्पूरमृगनाभिसमन्वितम् ।
विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चन्दनम्—

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽ अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्प्पतिः।
त्वामोषधेसोमोराजाव्विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत ॥$\frac{१२}{९८}$॥

मलयाचलसम्भूतं वृक्षसारं मनोहरम्।
सुगन्धियुक्तं सुखदं चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः चन्दनं समर्पयामि।

अक्षताः—

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रियाऽअधूषत। अस्तोषतस्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी ॥$\frac{३}{५१}$॥

अक्षताश्चन्दनैर्युक्तान् हरिद्रागन्धमिश्रितान्।
गृहाण देव देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्पमालाम्—

ॐ कर्द्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्द्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥

पाटयशंख-जपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः पुष्पमालां समर्पयामि ।

बिल्वपत्रम्—

ॐ शिवोभवप्प्रजाब्भ्योमानुषीब्भ्यस्त्वमङ्गिरः । माद्द्यावापृथिवीऽ-
अभिशोचीर्म्मान्तरिक्षम्मावनस्पतीन् ॥११/४५॥

त्रिदलानि अखण्डानि बिल्वपत्राणि सुन्दरि ।
पूज्येत् परया भक्त्या महालक्ष्मीं सुखप्रदाम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सिन्दूरं (सौभाग्यद्रव्यम्)—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥

सिन्दूरारुणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया ।
भक्त्या समर्पितं देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः सिन्दूरं समर्पयामि ।

सुगन्धितद्रव्यम्—

ॐ त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्त्योर्म्मुक्षीय मामृतात् । त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥ $\frac{३}{६०}$ ॥

तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च ।
मयाऽऽनीतानि पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथाङ्गपूजनम्

ॐ चपलायै नमः, पादौ पूजयामि ॥१॥
ॐ चञ्चलायै नमः, जानुनी पूजयामि ॥२॥
ॐ कमलायै नमः, कटिं पूजयामि ॥३॥
ॐ कात्यायन्यै नमः, नाभिं पूजयामि ॥४॥
ॐ जगन्मात्रे नमः, जठरं पूजयामि ॥५॥
ॐ विश्ववल्लभायै नमः, वक्षःस्थलं पूजयामि ॥६॥
ॐ कमलवासिन्यै नमः, भुजौ पूजयामि ॥७॥
ॐ पद्म-कमलायै नमः, मुखं पूजयामि ॥८॥
ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि ॥९॥
ॐ श्रियै नमः, शिरः पूजयामि ॥१०॥

॥ इत्यङ्गपूजनम् ॥

अथाष्टसिद्धि-पूजनम्

पूर्वादिक्रमेण अष्टदिक्षु अष्टसिद्धीः पूजयेत् । तद्यथा–

ॐ अणिम्ने नमः ॥१॥
ॐ महिम्ने नमः ॥२॥
ॐ गरिम्णे नमः ॥३॥
ॐ लघिम्ने नमः ॥४॥
ॐ प्राप्त्यै नमः ॥५॥
ॐ प्राकाम्यै नमः ॥६॥
ॐ ईशितायै नमः ॥७॥
ॐ वशितायै नमः ॥८॥

॥ इत्यष्टसिद्धि-पूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथाष्टलक्ष्मी–पूजनम्

पूर्वादिक्रमेण अष्टदिक्षु अष्टलक्ष्मीः पूजयेत् । तद्यथा–

ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः ॥१॥
ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः ॥२॥
ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः॥३॥
ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः ॥४॥
ॐ कामलक्ष्म्यै नमः ॥५॥
ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः ॥६॥
ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः ॥७॥
ॐ योगलक्ष्म्यै नमः ॥८॥

॥ इत्यष्टलक्ष्मीः पूजनम् ॥

॥ अथ आवरण पूजनम् ॥

संविन्मयपरे देवि । परामृत चरुप्रिये ।
अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते ॥

प्रथमावरणम्–

विन्दौ–ॐ महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीं पूजयामि ।

दक्षिणपार्श्वे–ॐ शङ्करनन्दनाय नमः शङ्करनन्दनं पूजयामि । ॐ शङ्खनिधये नमः शङ्खनिधिं पूजयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वामपार्श्वे—ॐ पुष्पाञ्जलिपुठाय नमः पुष्पाञ्जलिपुठं पूजयामि । ॐ पुष्पधन्विने नमः पुष्पधन्विनं पूजयामि । ॐ पद्मनिधये नमः पद्मनिधिं पूजयामि ।

पुरतः—ॐ दक्षिणपादप्रक्षालनोद्यतायै नमः दक्षिणपादप्रक्षालनोद्यतां पूजयामि । ॐ जन्हुसुतायै नमः जन्हुसुतां पूजयामि । ॐ वामपादप्रक्षालनोद्यतायै नमः वामपादप्रक्षालनोद्यतां पूजयामि । ॐ सूर्यसुतायै नमः सूर्यसुतां पूजयामि ।

पृष्ठतः—ॐ वरुणायै नमः वरुणां पूजयामि । इति पञ्चोपचारैः संपूज्य—पुष्पांजलिं दद्यात्—

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥

जलमादाय प्रथमावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

द्वितीयावरणम्—

त्रिकोणे—ॐ पद्मायै नमः पद्मां पूजयामि । ॐ कमलायै नमः कमलां पूजयामि । ॐ इन्दिरायै नमः इन्दिरां पूजयामि । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः। पुष्पांजलि दद्यात्—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥२॥
जलमादाय द्वितीयावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

तृतीयावरणम्—

षट्कोणे—आग्नेये-ॐ हिरणमय्यै नमः हिरणमयीं पूजयामि,
ईशाने—ॐचन्द्रायै नमः चन्द्रां पूजयामि ।
नैऋत्यै—ॐ रजतस्त्रजायै नमः रजतस्त्रजां पूजयामि ।
वायव्ये—ॐ हिरण्यस्त्रजायै नमः हिरण्यस्त्रजां पूजयामि ।
देव्या अग्रतः—ॐ हिरण्यवर्णायै नमः हिरण्यवर्णां पूजयामि ।
पुरतः आरभ्य चतुर्दिक्षु—ॐ हिरण्यवर्णायै नमः हिरण्यवर्णां पूजयामि ।
तृतीयावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्—

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥३॥
जलमादाय तृतीयावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्थावरणम्—

अष्टपत्रे—ततः पुरत आरभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेणाष्टदलमध्येषु—

ॐ महाकन्यायै नमः महाकन्यां पूजयामि । ॐ महादेव्यै नमः महादेवीं पूजयामि। ॐ भक्तानुग्रहकारिण्यै नमः भक्तानुग्रहकारिणीं पूजयामि । ॐ स्वप्रकाशात्मरूपिण्यै नमः स्वप्रकाशात्मरूपिणीं पूजयामि । ॐ महामायायै नमः महामायां पूजयामि । ॐ महेश्वर्यै नमः महेश्वरीं पूजयामि । ॐ वागीश्वर्यै नमः वागीश्वरीं पूजयामि । ॐ जगद्धात्र्यै नमः जगद्धात्रीं पूजयामि ।

चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्—

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥४॥

जंलमादाय चतुर्थावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पंचमावरणम्—

दशपत्रेषु—ॐ उमायै नमः उमां पूजयामि । ॐ महाकाल्यै नमः महाकालीं पूजयामि।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ महासरस्वत्यै नमः महासरस्वतीं पूजयामि । ॐ दुर्गायै नमः दुर्गां पूजयामि। ॐ गङ्गायै नमः गङ्गां पूजयामि । ॐ यमुनायै नमः यमुनां पूजयामि । ॐ महाशौर्यै नमः महाशौरीं पूजयामि । ॐ गायत्र्यै नमः गायत्रीं पूजयामि । ॐ रमायै नमः रमां पूजयामि । ॐ त्रिलोचनायै नमः त्रिलोचनां पूजयामि । पंचमावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥५॥

जलमादाय पंचमावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

षष्ठावरणम्–

द्वादशपत्रेषु–ॐ भद्रकाल्यै नमः भद्रकालीं पूजयामि । ॐ त्रिलोकात्मिकायै नमः त्रिलोकात्मिकां पूजयामि । ॐ क्रियालक्ष्म्यै नमः क्रियालक्ष्मीं पूजयामि । ॐ अरूपायै नमः अरूपां पूजयामि । ॐ सरूपायै नमः सरूपां पूजयामि । ॐ विश्वरूपिण्यै नमः विश्वरूपिणीं पूजयामि । ॐ पञ्चभूतात्मिकायै नमः पञ्चभूतात्मिकां पूजयामि । ॐ देवमात्रे नमः देवमातरं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजयामि । ॐ सुरेश्वर्यै नमः सुरेश्वरीं पूजयामि । ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः दारिद्र्यध्वंसिनीं पूजयामि । ॐ सर्वशक्त्यै नमः सर्वशक्तिं पूजयामि । षष्ठावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥६॥

जलमादाय षष्ठावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

सप्तमावरणम्—

चतुर्दशपत्रेषु–ॐ भैरव्यै नमः भैरवीं पूजयामि । ॐ विशालाक्ष्यै नमः विशालाक्षीं पूजयामि । ॐ रुक्मिण्यै नमः रुक्मिणीं पूजयामि । ॐ नारायण्यै नमः नारायणीं पूजयामि। ॐ मित्रविन्दायै नमः मित्रविन्दां पूजयामि । ॐ पद्माक्ष्यै नमः पद्माक्षीं पूजयामि। ॐ क्षेमकर्यै नमः क्षेमकरीं पूजयामि । ॐ सत्यायै नमः सत्यां पूजयामि । ॐ कालिन्द्यै नमः कालिन्दीं पूजयामि । ॐ विजयायै नमः विजयां पूजयामि । ॐ कान्तिमत्यै नमः कान्तिमतिं पूजयामि । ॐ रूपिण्यै नमः रूपिणीं पूजयामि । सप्तमावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ।।७।।

जलमादाय सप्तमावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

अष्टमावरणम्—

षोडशपत्रे—ॐ बलाकायै नमः बलाकां पूजयामि । ॐ विमलायै नमः विमलां पूजयामि । ॐ नवमालिकायै नमः नवमालिकां पूजयामि । ॐ विभीषिकायै नमः विभीषिकां पूजयामि । ॐ शाङ्कर्यै नमः शाङ्करीं पूजयामि । ॐ वसुमालिकायै नमः वसुमालिकां पूजयामि । ॐ मुक्तालङ्कारायै नमः मुक्तालङ्कारां पूजयामि । ॐ वरदायै नमः वरदां पूजयामि । ॐ मुक्त्यै नमः मुक्ति पूजयामि । ॐ सर्वशास्त्रधारिण्यै नमः सर्वशास्त्र-धारिणीं पूजयामि । ॐ समुद्रवसनायै नमः समुद्रवसनां पूजयामि । ॐ ब्रह्माण्ड-मणिमेखलायै नमः ब्रह्माण्डमणिमेखलां पूजयामि । ॐ अवस्थात्रयनिर्मुक्तायै नमः अवस्थात्रयनिर्मुक्तां पूजयामि । ॐ गुणत्रयविवर्जितायै नमः गुणत्रयविवर्जितां पूजयामि । ॐ योगध्यानैकसंन्यासिन्यै नमः योगध्यानैकसंन्यासिनीं पूजयामि । ॐ योगध्यानैकपरायणायै नमः योगध्यानैकपरायणां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूजयामि । अष्टमावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलि दद्यात्–

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥ ८॥

जलमादाय अष्टमावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

नवमावरणम्—

अष्टादशपत्रे–ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः आद्यलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः विद्यालक्ष्मीं पूजयामि । ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः सौभाग्यलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ अमृत-लक्ष्म्यै नमः अमृतलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ कामलक्ष्म्यै नमः कामलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः सत्यलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः भोगलक्ष्मीं पूजयामि । ॐ मुक्तिदात्र्यै नमः मुक्तिदात्रीं पूजयामि । ॐ ऋद्ध्यै नमः ऋद्धिं पूजयामि । ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिं पूजयामि । ॐ धनेश्वर्यै नमः धनेश्वरीं पूजयामि । श्रद्धायै नमः श्रद्धां पूजयामि। ॐ भोगिन्यै नमः भोगिनीं पूजयामि । ॐ धान्यायै नमः धान्यां पूजयामि । ॐ वेदत्रयविशोकायै नमः वेदत्रयविशोकां पूजयामि । नवमावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥१॥

जलमादाय नवमावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

दशमावरणम्–

विंशतिपत्रे–ॐ वेदान्तज्ञानरूपिण्यै नमः वेदान्तज्ञानरूपिणीं पूजयामि । ॐ नागयज्ञोपवीतिन्यै नमः नागयज्ञोपवीतिनीं पूजयामि । ॐ शैलपुत्र्यै नमः शैलपुत्रीं पूजयामि। ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः ब्रह्मचारिणीं पूजयामि । ॐ चन्द्रघण्टायै नमः चन्द्रघण्टां पूजयामि। ॐ कूष्माण्डायै नमः कूष्माण्डां पूजयामि । ॐ स्कन्दमात्रे नमः स्कन्दमातरं पूजयामि । ॐ कात्यायन्यै नमः कात्यायनीं पूजयामि । ॐ कालरात्र्यै नमः कालरात्रीं पूजयामि । ॐ महागौर्यै नमः महागौरीं पूजयामि । ॐ सिद्धिदायै नमः सिद्धिदां पूजयामि । ॐ सर्वात्मिकायै नमः सर्वात्मिकां पूजयामि । ॐ विश्वप्रसूत्यै नमः विश्वप्रसूतिं पूजयामि । ॐ रसायै नमः रसां पूजयामि । ॐ नवखण्डवत्यै नमः नवखण्डवतीं पूजयामि । ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षित्यै नमः क्षितिं पूजयामि । ॐ अनन्तायै नमः अनन्तां पूजयामि । ॐ धरायै नमः धरां पूजयामि । ॐ सर्वसंहारायै नमः सर्वसंहारां पूजयामि । ॐ कैवल्यदायै नमः कैवल्यदां पूजयामि । दशमावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्—

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम् ॥१०॥

जलमादाय दशमावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

एकादशावरणम्—

द्वाविंशतिपत्रे—ॐ वेदिकायै नमः वेदिकां पूजयामि । ॐ वेदरूपिण्यै नमः वेदरूपिणीं पूजयामि । ॐ गिरिसंभवायै नमः गिरिसंभवां पूजयामि । ॐ सूर्यमण्डलसंस्थितायै नमः सूर्यमण्डलसंस्थितां पूजयामि । ॐ सोममण्डलमध्यस्थायै नमः सोममण्डलमध्यस्थां पूजयामि । ॐ वायुमण्डलस्थायै नमः वायुमण्डलस्थां पूजयामि । ॐ वह्निमण्डलसंस्थायै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः वह्निमण्डलसंस्थां पूजयामि । ॐ चक्रियायै नमः चक्रिकां पूजयामि । ॐ चक्र मध्यसंस्थितायै नमः चक्रमध्यसंस्थितां पूजयामि । ॐ चक्रमार्गप्रदायै नमः चक्रमार्गप्रदां पूजयामि । ॐ सर्वसिद्धान्तमार्गप्रदायै नमः सर्वसिद्धिान्तमार्गप्रदायिनीं पूजयामि । ॐ षड्वर्गवर्जितायै नमः षड्वर्गवर्जितां पूजयामि । ॐ प्रत्यक्षादिप्रमावृतायै नमः प्रत्यक्षादिप्रमावृतां पूजयामि । ॐ विद्यामूर्तायै नमः विद्यामूर्ता पूजयामि । ॐ त्रैलोक्यमोहिन्यै नमः त्रैलोक्यमोहिनीं पूजयामि । ॐ विद्यायै नमः विद्यां पूजयामि । ॐ चर्मदायै नमः चर्मदां पूजयामि । ॐ रक्षायै नमः रक्षां पूजयामि । ॐ ब्रह्मस्थापितरूपायै नमः ब्रह्मस्थापितरूपां पूजयामि । ॐ कैवल्यज्ञानगोचरायै नमः कैवल्यज्ञानगोचरां पूजयामि । ॐ करुणायै नमः करुणां पूजयामि । एकादशावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमेकादशवरणार्चनम् ॥११॥

जलमादाय एकादशावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वादशावरणम्—

चतुर्विंशतिपत्रे—ॐ नित्यशुद्धायै नमः नित्यशुद्धां पूजयामि । ॐ नित्यतृप्तायै नमः नित्यतृप्तां पूजयामि । ॐ निर्विकारायै नमः निर्विकारां पूजयामि । ॐ निरीक्षणायै नमः निरीक्षणां पूजयामि । ॐ निराधारायै नमः निराधारां पूजयामि । ॐ निस्सङ्कल्पायै नमः निस्सङ्कल्पां पूजयामि । ॐ निराश्रयायै नमः निराश्रयां पूजयामि । ॐ निर्विकल्पायै नमः निर्विकल्पां पूजयामि । ॐ निर्यन्त्रायै नमः निर्यन्त्रां पूजयामि । ॐ निर्बीजायै नमः निर्बीजां पूजयामि । ॐ निर्वाणदायिन्यै नमः निर्वाणदायिनीं पूजयामि । ॐ नीरजायै नमः नीरजां पूजयामि । ॐ निखिलायै नमः निखिलां पूजयामि । ॐ निष्कम्पयायै नमः निष्कम्पां पूजयामि । ॐ नानादेहायै नमः नानादेहां पूजयामि । ॐ नानास्वरूपचिद्धात्र्यै नमः नानास्वरूपचिद्धात्रीं पूजयामि । ॐ न्यायवस्तुप्रकाशिकायै नमः न्यायवस्तुप्रकाशिकां पूजयामि । ॐ नीत्यै नमः नीतिं पूजयामि । ॐ निर्वृत्यै नमः निवृत्तिं पूजयामि । ॐ नृसिंह्यै नमः नृसिंहिं पूजयामि । ॐ निशितृप्तायै नमः निशितृप्तां पूजयामि । ॐ नित्योदितायै नमः नित्योदितां पूजयामि । द्वादशावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वादशावरणार्चनम् ॥१२॥

जलमादाय द्वादशावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

त्रयोदशावरणम्—

षड्विंशतिपत्रे—ॐ ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेदं पूजयामि । ॐ यजुर्वेदाय नमः यजुर्वेदं पूजयामि । ॐ सामवेदाय नमः सामवेदं पूजयामि । ॐ अथर्ववेदाय नमः अथर्ववेदं पूजयामि । ॐ छन्दोभ्यो नमः छन्दांसि पूजयामि । ॐ ज्यौतिषाय नमः ज्यौतिषं पूजयामि। ॐ निरुक्ताय नमः निरुक्तं पूजयामि । ॐ शिक्षायै नमः शिक्षां पूजयामि । ॐ कल्पाय नमः कल्पं पूजयामि । ॐ व्याकरणाय नमः व्याकरणं पूजयामि । ॐ पुराणेभ्यो नमः पुराणान् पूजयामि । ॐ जम्बूद्वीपाय नमः जम्बूद्वीपं पूजयामि । ॐ प्लक्षद्वीपाय नमः प्लक्षद्वीपं पूजयामि । ॐ कुशद्वीपाय नमः कुशद्वीपं पूजयामि । ॐ क्रौञ्चद्वीपाय नमः क्रौञ्चद्वीपं पूजयामि । ॐ शाकद्वीपाय नमः शाकद्वीपं पूजयामि । ॐ पुष्करद्वीपाय नमः पुष्करद्वीपं पूजयामि । ॐ अमरावत्यै नमः अमरावतीं पूजयामि । ॐ भोगवत्यै नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भोगवतीं पूजयामि । ॐ नयनवत्यै नमः नयनवतीं पूजयामि । ॐ सिद्धवत्यै नमः सिद्धवतीं पूजयामि । ॐ गान्धर्ववत्यै नमः गान्धर्ववतीं पूजयामि । ॐ लङ्कवत्यै नमः लङ्कवतीं पूजयामि । ॐ यशोवत्यै नमः यशोवतीं पूजयामि । त्रयोदशावरण देवताभ्यो नमः। गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं त्रयोदशावरणार्चनम् ॥१३॥

जलमादाय त्रयोदशावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

चतुर्दशावरणम्–

अष्टाविंशतिपत्रे–

ॐ सूर्याय नमः सूर्यं पूजयामि ॥१॥
ॐ चन्द्रमसे नमः चन्द्रमसं पूजयामि ॥२॥
ॐ भौमाय नमः भौमं पूजयामि ॥३॥
ॐ बुधाय नमः बुधं पूजयामि ॥४॥
ॐ गुरवे नमः गुरुं पूजयामि ॥५॥
ॐ शुक्राय नमः शुक्रं पूजयामि ॥६॥
ॐ शनये नमः शनिं पूजयामि ॥७॥
ॐ राहवे नमः राहुं पूजयामि ॥८॥
ॐ केतवे नमः केतुं पूजयामि ॥९॥
ॐ ईश्वराय नमः ईश्वरं पूजयामि ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ उमायै नमः उमां पूजयामि ॥११॥
ॐ स्कन्दाय नमः स्कन्दं पूजयामि ॥१२॥
ॐ विष्णवे नमः विष्णुं पूजयामि ॥१३॥
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं पूजयामि ॥१४॥
ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रं पूजयामि ॥१५॥
ॐ यमाय नमः यमं पूजयामि ॥१६॥
ॐ कालाय नमः कालं पूजयामि ॥१७॥
ॐ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तं पूजयामि॥१८॥
ॐ अग्नये नमः अग्निं पूजयामि ॥१९॥

ॐ अद्भ्यो नमः अपः पूजयामि ॥२०॥
ॐ पृथिव्यै नमः पृथिवीं पूजयामि ॥२१॥
ॐ विष्णवे नमः विष्णुं पूजयामि ॥२२॥
ॐ इन्द्राय नमः इन्द्रं पूजयामि ॥२३॥
ॐ इन्द्राण्यै नमः इन्द्राणीं पूजयामि ॥२४॥
ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिं पूजयामि॥२५॥
ॐ सर्पेभ्यो नमः सर्पान् पूजयामि ॥२६॥
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं पूजयामि ॥२७॥
ॐ गणपत्यादिपञ्चलोकपालेभ्यो नमः गणपत्यादिपञ्चलोकपालान् पूजयामि ॥२८॥

चतुर्दशावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्दशावरणार्चनम् ॥१४॥

जलमादाय चतुर्दशावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चदशावरणम्—

त्रिंशत्पत्रे—ॐ अश्विन्यै नमः अश्विनीं पूजयामि । ॐ भरण्यै नमः भरणीं पूजयामि। ॐ कृत्तिकायै नमः कृत्तिकां पूजयामि । ॐ रोहिण्यै नमः रोहिणीं पूजयामि। ॐ मृगशिरायै नमः मृगशिरां पूजयामि । ॐ आर्द्रायै नमः आर्द्रां पूजयामि । ॐ पुनर्वसवे नमः पुनर्वसुं पूजयामि । ॐ पुष्याय नमः पुष्यं पूजयामि । ॐ श्लेषायै नमः श्लेषां पूजयामि । ॐ मघायै नमः मघां पूजयामि । ॐ पूर्वाफाल्गुन्यै नमः पूर्वाफाल्गुनीं पूजयामि। ॐ उत्तराफाल्गुन्यै नमः उत्तराफाल्गुनीं पूजयामि । ॐ हस्ताय नमः हस्तं पूजयामि । ॐ चित्रायै नमः चित्रां पूजयामि । ॐ स्वात्यै नमः स्वातीं पूजयामि । ॐ विशाखायै नमः विशाखां पूजयामि । ॐ अनुराधायै नमः अनुराधां पूजयामि । ॐ ज्येष्ठायै नमः ज्येष्ठां पूजयामि । ॐ मूलाय नमः मूलं पूजयामि । ॐ पूर्वाषाढाभ्यो नमः पूर्वाषाढां पूजयामि । ॐ उत्तराषाढाभ्यो नमः उत्तराषाढां पूजयामि । ॐ श्रवणाय नमः श्रवणं पूजयामि । ॐ धनिष्ठायै नमः धनिष्ठां पूजयामि । ॐ शतभिषायै नमः शतभिषां पूजयामि। ॐ पूर्वाभाद्रपदाय नमः पूर्वाभाद्रपदं पूजयामि । ॐ उत्तराभाद्रपदाय नमः उत्तराभाद्रपदं पूजयामि । ॐ रेवत्यै नमः रेवतीं पूजयामि । ॐ सप्तऋषिभ्यो नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्तऋषीन् पूजयामि । ॐ भूरादिसप्तलोकेभ्यो नमः भूरादिसप्तलोकान् पूजयामि । ॐ अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवूसन् पूजयामि । पञ्चदशावरण देवताभ्यो नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चदशावरणार्चनम् ॥१५॥

जलमादाय पञ्चदशावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

षोडशावरणम्—

द्वात्रिंशत्पत्रे–

ॐ मेषाय नमः मेषं पूजयामि ॥१॥
ॐ वृषाय नमः वृषं पूजयामि ॥२॥
ॐ मिथुनाय नमः मिथुनं पूजयामि ॥३॥
ॐ कर्काय नमः कर्कं पूजयामि ॥४॥
ॐ सिंहाय नमः सिंहं पूजयामि ॥५॥
ॐ कन्यायै नमः कन्यां पूजयामि ॥६॥
ॐ तुलायै नमः तुलां पूजयामि ॥७॥
ॐ वृश्चिकाय नमः वृश्चिकं पूजयामि ॥८॥
ॐ धनाय नमः धनं पूजयामि ॥९॥
ॐ मकराय नमः मकरं पूजयामि ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ कुंभाय नमः कुभं पूजयामि ॥११॥ ॐ मीनाय नमः मीनं पूजयामि ॥१२॥

ॐ विष्कम्भादियोगेभ्यो नमः विष्कम्भादियोगान् पूजयामि । ॐ आनंदाद्यष्टविंशतियोगेभ्यो नमः आनंदाद्यष्टविंशतियोगान् पूजयामि । ॐ बवादिसप्तकरणेभ्यो नमः बवादिसप्तकरणान् पूजयामि । ॐ स्थिरादिसप्तकरणेभ्यो नमः स्थिरादिसप्तकरणान् पूजयामि। ॐ सप्तवारेभ्यो नमः सप्तवारान् पूजयामि । ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रान् पूजयामि । ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यान् पूजयामि । ॐ एकोनपञ्चाशन्मरुद्भ्यो नमः एकोनपञ्चाशन्मरुतः पूजयामि । ॐ षोडशमातृभ्यो नमः षोडशमातृः पूजयामि । ॐ षड्ऋतुभ्यो नमः षड्ऋतून् पूजयामि । ॐ द्वादशमासेभ्यो नमः द्वादशमासान् पूजयामि । ॐ द्वयनाभ्यां नमः द्वयनौ पूजयामि । ॐ पञ्चदशतिथिभ्यो नमः पञ्चदशतिथिं पूजयामि। ॐ षष्टिसंवत्सरेभ्यो नमः षष्टिसंवत्सरान् पूजयामि । ॐ सुपर्णेभ्यो नमः सुपर्णान् पूजयामि । ॐ यक्षेभ्यो नमः यक्षान् पूजयामि । ॐ विद्याधरेभ्यो नमः विद्याधरान् पूजयामि । ॐ अप्सरेभ्यो नमः अप्सरान् पूजयामि । ॐ रक्षोभ्यो नमः रक्षान् पूजयामि । ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वान् पूजयामि । षोडशावरण देवताभ्यो नमः । गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षोडशावरणार्चनम् ॥१६॥

जलमादाय षोडशावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुनः जलमादाय अनेन षोडशावरणार्चनेन "समस्तावरणदेवताभ्यो" नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि । अनया पूजया षोडशावरण 'समस्तावरण' देवताः प्रीयन्तां न मम ।

धूपम्—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः धूपमाघ्रापयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दीपम्—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणी पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः दीपं दर्शयामि । हस्तप्रक्षालनम् ।

नैवेद्यम्—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि । नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋतुफलम्[1]—

ॐ याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥ १२/८९॥

इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि ।

मुखवासार्थे ताम्बूलम्—

ॐ उतस्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः। श्येन-स्येवद्ध्रजतो ऽअङ्कसम्परि दधिक्राव्णः सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा ॥ ९/१५॥

पूगीफलादिसहितं कर्पूरेण च संयुतम् ।
ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेश्वरि ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि ।

---

१. पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टं अधोमुखम् ।
यथोत्पन्नं तथा देवं बिल्वपत्रं अधोमुखम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दक्षिणाद्रव्यम्—

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः, दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।

विशेषार्घ्यम्—

रूपं देहि जयं देहि सौभाग्यं देहि देवि मे ।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

नमस्कारम्—

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः, नमस्कारं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रार्थनां—

आब्रह्माण्ड-पिपीलिकान्त-तनुभृत् सुजृम्भमाणा स्फुटम्
जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्तिभासकतया सर्वत्र या दीव्यति ।
सा देवि जगदम्बिका भगवती श्रीराजराजेश्वरी
श्रीविद्या करुणानिधिः शुभकरी भूयात् सदा श्रेयसे ॥१॥

सिन्दूरारूण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्,
तारानायक शेखरांस्मितमुखी मापीनवक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रती,
सौम्यां रत्न घटस्थ रक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥२॥

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तव पादपङ्कजम् ।
परावरं पातु वरं सुमङ्गलं नमामि भक्त्या तव कामसिद्धये ॥३॥

भवानि ! त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी ।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मिः नमोऽस्तु ते ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्वदर्चनात् ॥५॥

हस्ते जलमादाय–अनयायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै सवाहनायै भगवती श्री महालक्ष्मी त्रिपुरसुन्दरीराजराजेश्वरीललिताम्बिकायै प्रीयतां न मम ।

आसन के सामने भूमि पर जल डालें **"शक्राय[१] नमः"** कहकर माथे से लगाएँ।

॥ इति श्री महालक्ष्मी पूजनम् ॥

१. यस्मिन् स्थाने जपं कृत्वा शक्रो हरति तज्जपम् ।
तन्मृदा लक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलकाकृति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ महाकाली (मषीपात्र "दवात्") पूजनम् ॥

दवात के चारों ओर मौली बांधकर तथा स्वस्तिक बनाकर श्री महाकाली का ध्यान करें ।

ध्यानम्—

सद्यश्छिन्न-शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं ।
घोरास्यां शिरसां स्त्रजं सुरुचिरामुन्मुक्त-केशावलीम् ॥
सृक्कासृक्-प्रवहां श्मशान-निलयां श्रुत्योः शवालंकृतिं ।
श्यामाङ्गी कृत-मेखलां शव-करैर्देवीं भजे कालिकाम् ॥१॥

मषि त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता ।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ॥२॥

या माया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्डविमर्दिनी ।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव ॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ महाकाली इहागच्छ इहतिष्ठ, इत्यावाह्य "ॐ महाकाल्यै नमः" इति षोडशोपचारैः [1]पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत् ।

अथावरणपूजनम् (हाथ में अक्षत लेकर प्रत्येक नाम द्वारा "दवात्" पर अक्षत छोड़ें)

ॐ काल्यै नमः ॥१॥ ॐ कपालिन्यै नमः ॥२॥ ॐ फुल्लायै नमः ॥३॥ ॐ कुरुकुलायै नमः ॥४॥ ॐ विरोधिन्यै नमः ॥५॥ ॐ विप्रचित्तायै नमः ॥६॥ ॐ उग्रप्रदत्तायै नमः ॥७॥ ॐ दिव्यायै नमः ॥८॥ ॐ नीलायै नमः ॥९॥ ॐ घनायै नमः ॥१०॥ ॐ बलाकायै नमः ॥११॥ ॐ मात्रायै नमः ॥१२॥ ॐ मुद्रायै नमः ॥१३॥ ॐ एतैर्नाममन्त्रैर्गन्धाक्षत-पुष्पादिभिः पूजां कृत्वा प्रार्थनां कुर्यात्–

या कालिका रोगहरा सुवन्द्या वैश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः ।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री ॥

श्री महाकाल्यै नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि । अनया पूजया महाकाली देव्याः प्रीयतां न मम ।

॥ इति महाकालीपूजनम् ॥

---

१. गन्ध पुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं पञ्च ते क्रमात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ महासरस्वती (बही, बसना, लेखनी) पूजनम् ॥

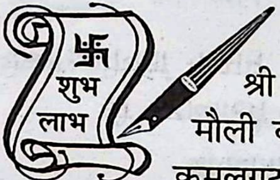

बही, बसना आदि में रोली, सिन्दूर इत्यादि से ॐ, स्वस्ति, श्री इत्यादि माङ्गलिक चिह्न अंकित करें तथा लेखनी (कलम) पर मौली बांधकर गन्ध, अक्षत, पुष्प, पांच हल्दी की गांठे, साबुत धनिया, कमलगट्टे, इत्यादि के द्वारा पंचोपचार अथवा षोडशोपचार से यथाशक्ति पूजन करें ।

आवाहनम्—

ॐ देवी स्तिस्त्रस्तिस्त्रोदेवीः पतिमिन्द्रमवर्द्धयन् । अस्पृक्क्षद्‌द्धारतीदिवꣳ रुद्रैर्व्यज्ञꣳ सरस्वतीडाव्वसुमती गृहान्व्वसुवनेव्वसुधेयस्यव्व्यन्तुवज ॥२८/१८॥

ॐ वाचांसि वाचस्पति भत्सरेण साराणि लब्धुं ग्रहमण्डलीव ।
मुक्ताक्ष सूत्रत्वमुपैति यस्याः सा सप्रसादास्तु सरस्वती ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यानम्—

ॐ शुक्लां ब्रह्म विचारसार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

ॐ महासरस्वती इहागच्छ इहतिष्ठ इत्यावाह्य "ॐ महासरस्वत्यै नमः"

"ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै नमः" इति मन्त्रेण **देवी सूक्तेन** वा षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य, आवरणपूजां कुर्यात् ।

अथावरणपूजनम् (प्रत्येक नाम के द्वारा बही पर चावल छोड़ें)

ॐ वाचिन्यै नमः ॥१॥ ॐ वाग्वादिन्यै नमः ॥२॥ ॐ अजितायै नमः ॥३॥ ॐ विष्णुमायायै नमः ॥४॥ ॐ हिङ्गुलायै नमः ॥५॥ ॐ यज्ञविद्यायै नमः ॥६॥ ॐ सिद्धविद्यायै नमः ॥७॥ ॐ प्रज्ञायै नमः ॥८॥ ॐ पद्मावत्यै नमः ॥९॥ ॐ भुवनेश्वर्यै नमः ॥१०॥ इत्यावरणपूजनम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ नामपूजा

लेखिन्यै नमः ॥१॥ सरस्वत्यै नमः ॥२॥ ब्रह्माण्यै नमः ॥३॥ भारत्यै नमः ॥४॥ गिरे नमः ॥५॥ वाचे नमः ॥६॥ वाण्यै नमः ॥७॥ हंसगमनायै नमः ॥८॥ पद्महस्तायै नमः ॥९॥ शारदायै नमः ॥१०॥ एतैर्नाममन्त्रैर्गन्धाक्षतपुष्पादिभिः पूजां कृत्वा प्रार्थनां कुर्यात्–

ॐ या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा वर दण्ड मण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृतिभि र्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

कृष्णानने द्विजिह्वे च चित्रगुप्तकरस्थिते ।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ॥

श्री महासरस्वत्यै नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि । अनया पूजया महासरस्वती देव्याः प्रीयतां न मम ।

॥ इति महासरस्वती पूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ श्री वैश्रवण (कुबेर) पूजनम् ॥

धनेश्वर कुबेर की प्रसन्नता के लिए "सर्वतोभद्र मण्डल" का निर्माण कर ब्रह्मादि-वैनाक्य पर्यन्त देवताओं का स्थापन कर वरुण सहित स्वर्णादि से निर्मित कुबेर की मूर्ति अथवा यन्त्र को चांदी के पात्र में स्थापित कर दुग्धधारा जलधारा से अभिषेक करें, सुन्दर वस्त्र से पोंछ कर लाल रेशमी आसन पर विराजमान करके विधिपूर्वक पूजन करें।

ध्यानम्—

मनुज वाह्य विमान वर स्थितम्, गरुड रत्न निभं निधि नायकम् ।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितम्, वरगदे दधतं भज तुन्दिलम् ॥

आवाहनम्—

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्वंव्वियूय ।
इहेहैषाङ्कृणुहि भोजनानियेबर्हिषोनमऽउक्तिँय्यजन्ति ॥२३/३८॥

आवाहयामि देव ! त्वामिहायाहि कृपां कुरु ।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष धनेश्वर ॥
श्रीकुबेरं आवाहयामि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुबेर मन्त्र स्वरूपो यथा—

यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये
धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा । (पंचत्रिंशदक्षरोमंत्रः)

विनियोगः—

अस्य श्रीकुबेरमन्त्रस्य विश्रवाऋषिर्बृहतीच्छन्द-शिवमित्र धनेश्वरो देवताममात्मनोऽभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—

ॐ विश्रवाऋषये नमः शिरसि । बृहतीच्छन्दसे नमः मुखे । शिवमित्र धनेश्वर देवतायै नमः हृदि । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

हृदयादिन्यासः—

यक्षाय हृदयाय नमः । कुबेराय शिरसे स्वाहा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैश्रवणाय शिखायै वषट् । धनधान्याधिपतये कवचाय हुम् ।
धनधान्य समृद्धिं मे नेत्रत्रयाय वौषट् । देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट् ।

करन्यासः—

यक्षाय अंगुष्ठाभ्यां नमः । कुबेराय तर्जनीभ्यां नमः ।
वैश्रवणाय मध्यमाभ्यां नमः । धनधान्याधिपतये अनामिकाभ्यां नमः ।
धनधान्यसमृद्धिं मे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । देहि दापय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।
कृत्वा षडंगं धनदं चिन्तयेदलकागतम् ॥

षडंगन्यास करने के पश्चात् अलकापुरी में विराजमान श्री कुबेर का ध्यान करें ।

ध्यानम्—

मनुजवाह्यविमानवरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम् ।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुन्दिलम् ॥

भावार्थः—मनुष्य श्रेष्ठ, सुन्दर विमान पर बैठे हुए, गारूडमणि जैसी आभा वाले, मुकुट आदि आभूषणों से अलंकृत, अपने दोनों हाथों में क्रमशः वर और गदा धारण किए

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुए, तुन्दिल शरीर वाले, शिव के मित्र निधीश्वर कुबेर का मैं ध्यान करता हूं ।।

इति ध्यात्वा ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले धर्मादिपरतत्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य–

ॐ धर्मादिपरतत्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः संपूज्य । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्ति वा रजतपात्रे निधाय धृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां, जलधारां च दत्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोञ्छय **ॐ वैश्रवणाय पुष्पासनाय नमः** इति पुष्पासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्यआवाहनादिपुष्पांतैरूपचारैः पूजयेत्–

नाना-रत्न-समायुक्तं कार्त-स्वरविभूषितम् ।
आसनं देव-देवेश ! प्रीत्यर्थ प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री कुबेराय नमः आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ।

पाद्यम्–

पाद्यं गृहाण देवेश, सर्वक्षेम-समर्थ भोः ।
भक्त्या समर्पितं देव, लोकनाथ ! नमोऽस्तु ते ॥

श्री कुबेराय नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्घ्यम्—

नमस्ते देव-देवेश ! नमस्ते धरणीधर !
नमस्ते जगदाधार ! अर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम् ।

श्री कुबेराय नमः हस्तयोः अर्घ्यं, मुखे आचमनीयं, सर्वाङ्गे स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—

पञ्चामृतं मया नीतं पयो दधि घृतं मधु ।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री कुबेराय नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

वस्त्रम्—

शीतवातोष्ण-सन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्री कुबेराय नमः वस्त्रं समर्पयामि । वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञोपवीतम्—

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः ।

श्री कुबेराय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

गन्धम्—

श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री कुबेराय नमः गन्धं समर्पयामि ।

अक्षताः—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

श्री कुबेराय नमः अक्षतान् समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुष्पमालाम्—

सेवन्तिका-वकुल-चम्पक-पाटालाब्जैः,
पुन्नाग-जाति-करवीर-रसालपुष्पैः ।
बिल्व-प्रवाल-तुलसीदल-मल्लिकाभि,
स्त्वां पूजयामि जगदीश्वर! मे प्रसीद ॥

श्री कुबेराय नमः पुष्पाणि पुष्पमालाञ्च समर्पयामि ।

नानापरिमलद्रव्यम्—

नानापरिमलैर्द्रव्यै-र्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् ।
अवीरनामकंचूर्णं पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री कुबेराय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुगन्धितद्रव्यम्—

चम्पकाशोक वकुल-मालती-मोगरादिभिः ।
वासितं स्निग्धताहेतु तैलं चारू प्रगृह्यताम् ॥

श्री कुबेराय नमः सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि ।

संपूज्य देव्याज्ञया आवरण पूजां कुर्यात् ॥ तद्यथा पुष्पाञ्जलिमादाय—

संविन्मय परो देवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां देहि धनद परिवारार्चनाय मे ॥

इत्यावाह्य [१]षट्कोणेषु आवरणपूजनं कुर्यात् ।

१. कुबेर यन्त्र पर अक्षत छोड़ते हुए आवरण पूजन व जल से तर्पण करें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ आवरण पूजनम् ॥

प्रथमावरणम्–

(आग्नेयां)

ॐ यक्षाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥

(नैऋत्यां)

ॐ कुबेराय शिरसे स्वाहा । शिरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥२॥

(वायव्यां)

ॐ वैश्रवणाय शिखायै वषट् । शिखाश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥

(ऐशान्यां)

ॐ धन धान्याधिपतये कवचाय हुम् । कवचश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(पूर्वे)

ॐ धनधान्यसमृद्धिं मे नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥

(दिक्षु)

ॐ देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥

इति षडंगानि पूजयेत् । गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि प्रथमावरण देवताभ्यो नमः । ततः पुष्पांजलिमादाय (हाथ में पुष्प लेकर कुबेर का स्मरण करें)–

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शिवमित्र धनेश्वर ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥

जल लेकर **प्रथमावरण** देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु इस प्रकार उच्चारण कर पृथ्वी पर जल छोड़ें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वितीयावरणम्–

अष्टदलेषु अष्टकुबेरमूर्ति पूजयेत्–

ॐ यक्षाय नमः ॥१॥

ॐ वैश्रवणाय नमः ॥२॥

ॐ धनदाय नमः ॥३॥

ॐ वित्तेश्वराय नमः ॥४॥

ॐ धनाध्यक्षाय नमः ॥५॥

ॐ निधिनायकाय नमः ॥६॥

ॐ धान्याधिपतये नमः ॥७॥

ॐ शिवसखाय नमः ॥८॥

इत्यष्टौ पूजयित्वा गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः । हाथ में पुष्प लेकर कुबेर का स्मरण करते हुए पुष्पाञ्जलि दें–

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शिवमित्र धनेश्वर ।
भक्त्या समर्पयेतुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥२॥

जल लेकर द्वितीयावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु बोलकर पृथ्वी पर जल छोड़ दें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तृतीयावरणम्—भूपुरौ (परिधि में)—

पूर्वे—**इन्द्राय नमः** ॥१॥
आग्नेयां—**अग्नये नमः** ॥२॥
दक्षिणे—**यमाय नमः** ॥३॥
नैर्ऋत्यां—**नैर्ऋतये नमः** ॥४॥
पश्चिमे—**वरुणाय नमः** ॥५॥
वायव्यां—**वायवे नमः** ॥६॥
उत्तरे—**सोमाय नमः** ॥७॥
ऐशान्यां—**ईशानाय नमः** ॥८॥
पूर्व ईशानयोर्मध्ये—**ब्रह्मणे नमः** ॥९॥
पश्चिमनैर्ऋतयोर्मध्ये—**अनन्ताय नमः** ॥१०॥

इन्द्रादिदशदिक्पालान् संपूज्य गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । तृतीयावरण देवताभ्यो नमः । पुष्पाञ्जलिमादाय—

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शिवमित्रधनेश्वर ।
भक्त्या समर्पयेतुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥३॥

जलमादाय **तृतीयावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु** इति वदेत् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्थावरणम्–भूपुरौ (परिधि में)–

पूर्वादि क्रम से दिक्पालों के समीप उनके आयुधों का पूजन करें ।

ॐ वज्राय नमः ॥१॥
ॐ शक्तये नमः ॥२॥
ॐ दण्डाय नमः ॥३॥
ॐ खड्गाय नमः ॥४॥
ॐ पाशाय नमः ॥५॥
ॐ अंकुशाय नमः ॥६॥
ॐ गदायै नमः ॥७॥
ॐ त्रिशूलाय नमः ॥८॥
ॐ पद्माय नमः ॥९॥
ॐ चक्राय नमः ॥१०॥

इति वज्राद्यायुधानि संपूज्य गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि । चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः। पुष्पाञ्जलिं दद्यात्–

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शिवमित्र धनेश्वर ।
भक्त्या समर्पयेतुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥४॥

इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा चतुर्थावरण देवताः पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् ॥ इत्यावरण पूजां कृत्वा संपूज्य–

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धूपम्—

वनस्पति-रसोद्भूतो गन्धाढयः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री कुबेराय नमः धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम्—

साज्यं वर्ति-संयुक्तं च वह्निना योजितं मया,
दीपं गृहाण देवेश ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ।

श्री कुबेराय नमः प्रत्यक्ष दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्यम्—

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च ।
आहारो भक्ष्य-भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।

श्री कुबेराय नमः नैवेद्यं निवेदयामि । सामने रखे पात्र में पांच बार जल छोड़ें—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ॥

मध्ये पानीयं आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

करोद्वर्तनार्थे चन्दनम्—

करोद्वर्तनकं देव सुगन्धैः परिवासितैः ।
गृहीत्वा मे वरंदेहि परत्र च परां गतिम् ॥

श्री कुबेराय नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ऋतुफलम्—

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

श्री कुबेराय नमः ऋतुफलानि समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ताम्बूलम्—

पूगीफल महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्ण-संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री कुबेराय नमः मुखवासार्थे ताम्बूलवीटिकां समर्पयामि ।

दक्षिणाद्रव्यम्—

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्री कुबेराय नमः दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि ।

विशेषार्घ्यम्—

रक्ष रक्ष धनाध्यक्ष शिवमित्र धनेश्वर ।
भक्तानामभय कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ॥

श्री कुबेराय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि नमस्करोमि ।

प्रार्थनां—

धनाध्यक्ष देवाय नरयानोपवेशिने ।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने ॥१॥
स्वर्णभासं कुबेरं च गदापाण्यश्व वाहनम् ।
चित्रिणी पद्मासहितं निधीश्वरमहं भजे ॥२॥
धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च ।
भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धन-धान्यादिसम्पदः ॥३॥
कुबेराय नमस्तुभ्यं नानाभण्डार संस्थिताः ।
यत्र लक्ष्मीर्भवेद् देव धनं चिनु नमोऽस्तु ते ॥४॥

प्रार्थना पूर्वक नमस्कारं समर्पयामि कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । जलमादाय अनेन कृतेन पूजनेन श्री कुबेरः प्रीयतां न मम ।

॥ इति श्री वैश्रवण (कुबेर) पूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ सर्वदारिद्र्यनाशनोऽपरः कुबेरमन्त्रः ॥

यह दारिद्र्यनाशक कुबेरमन्त्र विधान है । इसके प्रयोग से विशेष रूप से सभी प्रकार के दारिद्र्य का नाश हो जाता है तथा मनुष्य को धन-धान्य विपुल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

आदौ तारपुटा लक्ष्मीस्ततो मायापुटा रमा ।
तत कामपुटा सैव डेन्तो वित्तेश्वरो नमः ।
षौडशाक्षरमन्त्रोऽयं सर्वदारिद्र्यनाशनः ॥ (मन्त्रमहोदधौ)

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः ॥

(षोडशाक्षरो मंत्रः)

अथ मन्त्रान्तरं वक्ष्ये ॐ क्लीं श्रीं समुच्चरेत् ।
श्रीं ह्रींद क्लीं ॐ विंवित्तेश्वराय नम इत्यादि ॥ (मेरूतन्त्रे)

ॐ वैश्रवणाय स्वाहा । इत्यष्टाक्षरोमन्त्रः ॥ (मन्त्र महार्णव)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विनियोगः—

अस्य श्री कुबेरमन्त्रस्य विश्रवाऋषिर्बृहतीच्छन्दः शिवमित्रधनेश्वरो देवता ममात्मनोऽभीष्ट सिद्ध्यर्थेजपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः—

विश्रवाऋषये नमः शिरसि । बृहतीच्छन्दसे नमः मुखे । शिवमित्र धनेश्वरो देवतायै नमः हृदि । विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

हृदयादिषडङ्गन्यासः—

ॐ श्रीं ॐ हृदयाय नमः । ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा । ह्रीं क्लीं शिखायै वषट्। श्री क्लीं कवचाय हुम् । वित्तेश्वराय नेत्रत्रयाय वौषट् । नमः अस्त्राय फट्।

करन्यासः—

ॐ श्रीं ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ह्रीं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । श्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः । वित्तेश्वराय कनिष्ठिकाभ्यां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमः । नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

ध्यानम्—

धनपूर्ण स्वर्णकुंभं तथा रत्नकरण्डकं
हस्ताभ्यां विप्लुतं खर्वकर पादं च तुन्दिलम् ।
वटाधस्ताद् रत्नपीठोपविष्टं सुस्मिताननं
एवं कृतहुतो मंत्री लक्ष्म्या जयति वित्तपम् ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः यथा लब्धोपचारैर्वा पूजयेत् ।

॥ इति सर्वदारिद्रनाशनोऽपरः कुबेरमन्त्रः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथतुलापूजनम् ॥

तुला (तराजू) पर स्वस्तिक बनाकर मौली (कलावा) बांधकर इस प्रकार पूजन करें। पुष्प लेकर ध्यान करें–

ध्यानम्–

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता ।
साक्षिभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥१॥
त्वं तुले सर्वदेवानां प्रमाणमिह कीर्तित ।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि धर्मार्थ सुखहेतवे ॥२॥

"ॐ तुलायै नमः" तुलामावाहयामि स्थापयामि, इत्यावाह्य पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थनां कुर्यात् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पदार्थमान सिद्ध्यर्थं ब्रह्मणा कल्पिता पुरा ।
तुलानामेति कथितं संख्यारूपमुपास्महे ॥
उन्मानं धनधान्यानां तोलनाय विनिर्मितम् ।
लोकानां धर्म रक्षार्थं तस्मात्वं पूजयाम्यहम् ॥

तुलायै नमः अनया पूजया प्रीयतां न मम ।

॥ इति तुला पूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ दीपावली (दीपक) पूजनम् ॥

ग्यारह अथवा श्रद्धानुसार अधिक दीपक जलाकर थाल में रखकर श्री महालक्ष्मी के समक्ष रखें, तत्पश्चात् "ॐ दीपावल्यै नमः" इस मन्त्र से पंचोपचार विधि से पूजन कर प्रार्थना करें–

दीपोज्योति परब्रह्म दीपोज्योति जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योति र्नमोऽस्तुते ॥१॥
त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदग्निश्च तारकाः ।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिः दीपावल्यै नमो नमः ॥२॥

'दीपावल्यै नमः' कहकर दीपकों पर खील, बताशे, पुष्प इत्यादि चढ़ावें धोक दें तथा दीपकों को घर के प्रांगण में रख दें ।

जलमादाय अनया पूजया प्रीयतां न मम । (भूमि पर जल छोड़ दें)

॥ इति दीपावली पूजनम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ धनप्रदायक महालक्ष्मी मन्त्रा:[१] ॥

महालक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए निम्नलिखित मन्त्रों में से यथाशक्ति दीपावली की रात्रि में किसी भी मन्त्र का जाप करने से भगवती की विशेष कृपा प्राप्त होती है ।

१. लक्ष्मी एकाक्षरबीजमन्त्रः—**श्रीं ।**

२. चतुरक्षर बीज मन्त्रः—**ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं ।**

३. दशाक्षर मन्त्रः—**ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा ।**

४. सिद्धलक्ष्मी एकादशाक्षर मन्त्रः—**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः ।**

---

१. पुस्तके लिखितान् मन्त्रान् दृष्ट्वा जपति यो नरः ।
जीवन्नेव स चाण्डालः मृतः श्वा चाभिजायते ॥

भावार्थ :—जो मनुष्य पुस्तक में लिखे मन्त्रों को देखकर जपता है (गुरुमुख से प्राप्त किए बिना), वह जब तक जीवित है तब तक चाण्डाल है और मृत्यु के उपरान्त श्वान (कुत्ते) की योनि में उत्पन्न होता है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५. द्वादशाक्षरमहालक्ष्मी मन्त्रः—ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः ।

६. सप्तविंशत्यक्षर महालक्ष्मी मन्त्रः—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीदश्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ।

७. ज्येष्ठालक्ष्मी मन्त्रः—

ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः । (इति सप्तदशाक्षरो मन्त्रः)

८. वसुधालक्ष्मी मन्त्रः—

ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ।

(इत्यष्टाविंशत्यक्षरोमंत्रः)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीकमलायै नमः ॥

श्रीकमला अष्टोत्तरशतनामावलिः

ध्यानम्—

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

१. ॐ महामायायै नमः ।
२. ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
३. ॐ महावाण्यै नमः ।
४. ॐ महेश्वर्यै नमः ।
५. ॐ महादेव्यै नमः ।
६. ॐ महारात्र्यै नमः ।
७. ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः ।
८. ॐ कालरात्र्यै नमः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९. ॐ कुह्वै नमः ।
१०. ॐ पूर्णायै नमः ।
११. ॐ आनन्दायै नमः ।
१२. ॐ आद्यायै नमः ।
१३. ॐ भद्रिकायै नमः ।
१४. ॐ निशायै नमः ।
१५. ॐ जयायै नमः ।
१६. ॐ रिक्तायै नमः ।
१७. ॐ महाशक्त्यै नमः ।
१८. ॐ देवमात्रे नमः ।
१९. ॐ कृशोदर्यै नमः ।
२०. ॐ शच्यै नमः ।
२१. ॐ इन्द्राण्यै नमः ।
२२. ॐ शक्रनुतायै नमः ।
२३. ॐ शङ्करप्रियवल्लभायै नमः ।
२४. ॐ महावराहजनन्यै नमः ।
२५. ॐ मदनोन्मथिन्यै नमः ।
२६. ॐ मह्यै नमः ।
२७. ॐ वैकुण्ठनाथरमण्यै नमः ।
२८. ॐ विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः ।
२९. ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ।
३०. ॐ विश्वमात्रे नमः ।
३१. ॐ वरदायै नमः ।
३२. ॐ अभयदायै नमः ।
३३. ॐ शिवायै नमः ।
३४. ॐ शूलिन्यै नमः ।
३५. ॐ चक्रिण्यै नमः ।
३६. ॐ मायै नमः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३७. ॐ पाशिन्यै नमः ।
३८. ॐ शङ्खधारिण्यै नमः ।
३९. ॐ गदिन्यै नमः ।
४०. ॐ मुण्डमालायै नमः ।
४१. ॐ कमलायै नमः ।
४२. ॐ करुणालयायै नमः ।
४३. ॐ पद्माक्षधारिण्यै नमः ।
४४. ॐ अम्बायै नमः ।
४५. ॐ महाविष्णुप्रियङ्कर्यै नमः ।
४६. ॐ गोलोकनाथरमण्यै नमः ।
४७. ॐ गोलोकेश्वरपूजितायै नमः।
४८. ॐ गयायै नमः ।
४९. ॐ गङ्गायै नमः ।
५०. ॐ यमुनायै नमः ।
५१. ॐ गोमत्यै नमः ।
५२. ॐ गरुडासनायै नमः ।
५३. ॐ गण्डक्यै नमः ।
५४. ॐ सरय्वै नमः ।
५५. ॐ ताप्यै नमः ।
५६. ॐ रेवायै नमः ।
५७. ॐ पयस्विन्यै नमः ।
५८. ॐ नर्मदायै नमः ।
५९. ॐ कावेर्यै नमः ।
६०. ॐ केदारस्थलवासिन्यै नमः ।
६१. ॐ किशोर्यै नमः ।
६२. ॐ केशवनुतायै नमः ।
६३. ॐ महेन्द्रपरिवन्दितायै नमः ।
६४. ॐ ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिण्यै नमः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

६५. ॐ वेदपूजितायै नमः ।
६६. ॐ कोटिब्रह्माण्डमध्यस्थायै नमः।
६७. ॐ कोटिब्रह्माण्डकारिण्यै नमः।
६८. ॐ श्रुतिरूपायै नमः ।
६९. ॐ श्रुतिकर्यै नमः ।
७०. ॐ श्रुतिसृतिपरायणायै नमः ।
७१. ॐ इन्दिरायै नमः ।
७२. ॐ सिन्धुतनयायै नमः ।
७३. ॐ मातङ्ग्यै नमः ।
७४. ॐ लोकमातृकायै नमः ।
७५. ॐ त्रिलोकजनन्यै नमः ।
७६. ॐ तन्त्रायै नमः ।
७७. ॐ तन्त्रमन्त्रस्वरूपिण्यै नमः ।
७८. ॐ तरुण्यै नमः ।
७९. ॐ तमोहन्त्र्यै नमः ।
८०. ॐ मङ्गलायै नमः ।
८१. ॐ मङ्गलायनायै नमः ।
८२. ॐ मधुकैटभमथन्यै नमः ।
८३. ॐ शुम्भासुरविनाशिन्यै नमः ।
८४. ॐ निशुम्भादिहरायै नमः ।
८५. ॐ मात्रे नमः ।
८६. ॐ हरिशङ्करपूजितायै नमः ।
८७. ॐ सर्वदेवमय्यै नमः ।
८८. ॐ सर्वायै नमः ।
८९. ॐ शरणागतपालिन्यै नमः ।
९०. ॐ शरण्यायै नमः ।
९१. ॐ शम्भुवनितायै नमः ।
९२. ॐ सिन्धुतीरनिवासिन्यै नमः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९३. ॐ गन्धर्वगानरसिकायै नमः।
९४. ॐ गीतायै नमः।
९५. ॐ गोविन्दवल्लभायै नमः।
९६. ॐ त्रैलोक्यपालिन्यै नमः।
९७. ॐ तत्वरूपायै नमः।
९८. ॐ तारुण्यपूरितायै नमः।
९९. ॐ चन्द्रावल्यै नमः।
१००. ॐ चन्द्रमुख्यै नमः।
१०१. ॐ चन्द्रिकायै नमः।
१०२. ॐ चन्द्रपूजितायै नमः।
१०३. ॐ चन्द्रायै नमः।
१०४. ॐ शशाङ्कभगिन्यै नमः।
१०५. ॐ गीतवाद्यपरायणायै नमः।
१०६. ॐ सृष्टिरूपायै नमः।
१०७. ॐ सृष्टिकर्यै नमः।
१०८. ॐ सृष्टिसंहारकारिण्यै नमः।

।। इति शाक्तप्रमोदे श्रीकमलाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ श्रीसूक्तम् ॥

विनियोगः—

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य। आनन्दकर्दम चिक्लीतेन्दिरा सुता ऋषयः। श्री रग्निश्च देवता। सूक्तेस्मिन्नाद्यास्तिस्त्रोऽनुष्टुभः। कांसोस्मीति चतुर्थीबृहती, चन्द्रां प्रभासाम्, आदित्यवर्णे इति पञ्चमीषष्ठ्यौत्रिष्टुभौ, ततोऽष्टावनुष्टुभः तां म आवह इति पञ्चदशी प्रस्तार पङ्क्ति छन्दस्का इति नानाछन्दांसि। हिरण्यवर्णामिति बीजम्। कांसोस्मितामिति शक्तिः। तां म आवह जातवेद इति कीलकम्। श्री महालक्ष्मीप्रीत्यर्थे जपे पाठे च विनियोगः।

न्यासः—

१. ॐ हिरण्यवर्णाम्० ।	वामकरे ।
२. ॐ तां मऽआवह० ।	दक्षिणकरे ।
३. ॐ अश्वपूर्वाम्० ।	वामपादे ।
४. ॐ कां सोऽस्मिताम्० ।	दक्षिणपादे ।
५. ॐ चन्द्रां प्रभासाम्० ।	वामजानौ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

६. ॐ आदित्यवर्णे० ।	दक्षिणजानौ ।
७. ॐ उपैतु माम्०	वामकट्याम् ।
८. ॐ क्षुत्पिपासामलाम्०	दक्षिणकट्याम् ।
९. ॐ गन्धद्वाराम्० ।	नाभौ ।
१०. ॐ मनसः काममाकूतिम्०	हृदये ।
११. ॐ कर्दमेन प्रजा भूता०	वामबाहौ ।
१२. ॐ आपः सृजन्तु०	दक्षिणबाहौ ।
१३. ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्०	कण्ठे ।
१४. ॐ आर्द्रां यः करिणीम्०	मुखे ।
१५. ॐ तां मऽआवह०	नेत्रयोः ।
१६. ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०	मूर्ध्नि ।

हृदयादिषडङ्ग न्यासः—

१. कर्दमेन प्रजा भूता०	हृदयाय नमः ।
२. आपः सृजन्तु०	शिरसे स्वाहा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३. आर्द्रां पुष्करिणीम्०	शिखायै वषट् ।
४. आर्द्रां यः करिणीम्०	कवचाय हुम् ।
५. तां म ऽआवह०	नेत्राभ्यां वौषट् ।
६. यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्—

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिमुकुटविचित्राऽलङ्कृताऽऽकल्पजालैः
सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥

देवी के अर्चन में 'श्रीसूक्त' की अतिशय मान्यता है । विशेषकर भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए 'श्रीसूक्त' के पाठ की विशेष महिमा बतायी गई है । ऐश्वर्य एवं समृद्धि की कामना से इस सूक्त की ऋचाओं का पाठ, तथा हवन, पूजन अभीष्टदायक होता है । यहाँ यह सूक्त सानुवाद प्रस्तुत है—

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं [1]जातवेदो म आवह ॥१॥

हे जातवेदा (सर्वज्ञ) अग्निदेव ! आप सुवर्ण के समान वर्णवाली, किंचित् हरितवर्णविशिष्टा, सोने और चांदी के हार पहननेवाली, चन्द्रवत् प्रसन्नकान्ति, स्वर्णमयी लक्ष्मीदेवी का मेरे लिए आवाहन करें ॥१॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

हे अग्ने ! जिनका कभी विनाश नहीं होता तथा जिनके आगमनसे मैं स्वर्ण, गौ, घोड़े तथा पुत्रादि को प्राप्त करूंगा, उन लक्ष्मीदेवीका, मेरे लिए आवाहन करें ॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्[2] ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥

---

१. जात एव (उत्पन्न एव) सर्वं जानाति इति जातवेदः।
२. पाठान्तर – प्रबोधिनीम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिन देवी के आगे घोड़े तथा उनके पीछे रथ रहते हैं तथा जो हस्तिनादको सुनकर प्रमुदित होती हैं, उन्हीं श्रीदेवी का मैं आवाहन करता हूं; लक्ष्मीदेवी मुझे प्राप्त हों ॥३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

जो साक्षात् ब्रह्मरूपा, मन्द-मन्द मुस्करानेवाली, सोनेके आवरणसे आवृत, दयार्द्र, तेजोमयी, पूर्णकामा, भक्तानुग्रहकारिणी, कमलके आसन पर विराजमान तथा पद्मवर्णा हैं, उन लक्ष्मीदेवीका मैं यहां आवाहन करता हूँ ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥

मैं चन्द्रके समान शुभ्र कान्तिवाली, सुन्दर द्युतिशालिनी, यशसे दीप्तिमती, स्वर्गलोक में देवगणों के द्वारा पूजिता, उदारशीला, पद्महस्ता लक्ष्मीदेवी की शरण ग्रहण करता हूं। मेरा दारिद्र्य दूर हो जाय । मैं आपको शरण्य के रूप में वरण करता हूँ ॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मा याऽन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ ६॥

हे सूर्य के समान प्रकाशस्वरूपे ! आपके ही तपसे वृक्षों में श्रेष्ठ मंगलमय बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ। उसके फल आपके अनुग्रह से हमारे बाहरी और भीतरी दारिद्र्य को दूर करें ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥

हे देवी ! देवसखा कुबेर और उनके मित्र मणिभद्र तथा दक्ष-प्रजापतिकी कन्या कीर्ति मुझे प्राप्त हों अर्थात् मुझे धन और यश की प्राप्ति हो । मैं इस राष्ट्र (देश) में उत्पन्न हुआ हूं, मुझे कीर्ति और ऋद्धि प्रदान करें ॥७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मी की ज्येष्ठ बहन अलक्ष्मी (दरिद्रता की अधिष्ठात्री देवी)–का, जो क्षुधा और पिपासासे मलिन–क्षीणकाय रहती हैं, मैं नाश चाहता हूं । देवी ! मेरे घर से सब प्रकार के दारिद्र्य और अमंगल को दूर करो ॥८॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥

सुगन्धित जिनका प्रवेशद्वार है, जो दुराधर्षा तथा नित्यपुष्टा हैं और जो गोमय के मध्य निवास करती हैं, सब भूतों की स्वामिनी उन लक्ष्मीदेवी का मैं अपने घर में आवाहन करता हूँ ॥९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

मन की कामनाओं और संकल्प की सिद्धि एवं वाणी की सत्यता मुझे प्राप्त हो; गौ आदि पशुओं एवं विभिन्न अन्नों–भोग्य पदार्थों के रूप में तथा यश के रूप में श्रीदेवी हमारे यहाँ आगमन करें ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

लक्ष्मी के पुत्र कर्दम की हम सन्तान हैं । कर्दमऋषि ! आप हमारे यहां उत्पन्न हों तथा पद्मों की माला धारण करनेवाली माता लक्ष्मीदेवी को हमारे कुल में स्थापित करें ॥११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

जल स्निग्ध पदार्थों की सृष्टि करे । लक्ष्मीपुत्र चिक्लीत ! आप भी मेरे घर में वास करें और माता लक्ष्मीदेवी का मेरे कुल में निवास करायें ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥

हे अग्ने ! आर्द्रस्वभावा, कमलहस्ता, पुष्टिरूपा, पीतवर्णा, पद्मों की माला धारण करनेवाली, चन्द्रमा के समान शुभ्र कान्ति से युक्त, स्वर्णमयी लक्ष्मीदेवी का मेरे यहाँ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवाहन करें ॥१३॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥

हे अग्ने ! जो दुष्टों का निग्रह करनेवाली होने पर भी कोमल स्वभाव की हैं जो मंगलदायिनी, अवलम्बन प्रदान करनेवाली यष्टिरूपा, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्णमालाधारिणी, सूर्यस्वरूपा तथा हिरण्यमयी हैं, उन लक्ष्मीदेवी का मेरे लिए आवाहन करें ॥१४॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

हे अग्ने ! कभी नष्ट न होनेवाली उन लक्ष्मीदेवी का मेरे लिए आवाहन करें, जिनके आगमन से बहुत-सा धन, गौएं, दासियां, अश्व और पुत्रादि हमें प्राप्त हों ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिसे लक्ष्मी की कामना हो, वह प्रतिदिन पवित्र और संयमशील होकर अग्नि में घी की आहुतियाँ दे तथा इन पन्द्रह ऋचाओं वाले श्रीसूक्त का निरन्तर पाठ करे ॥१६॥

पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं निधत्स्व ॥१७॥

कमल-सदृश मुखवाली ! कमल-दलपर अपने चरणकमल रखनेवाली ! कमल में प्रीति रखनेवाली ! कमल-दल के समान विशाल नेत्रोंवाली ! समग्र संसार के लिए प्रिय ! भगवान् विष्णु के मनके अनुकूल आचरण करनेवाली ! आप अपने चरणकमल को मेरे हृदय में स्थापित करें ॥१७॥

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१८॥

कमल के समान मुखमण्डलवाली ! कमल के समान ऊरुप्रदेशवाली ! कमल-सदृश नेत्रोंवाली ! कमल से आविर्भूत होनेवाली ! पद्माक्षि ! आप उसी प्रकार मेरा पालन करें, जिससे मुझे सुख प्राप्त हो ॥१८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥१९॥

अश्वदायिनी, गोदायिनी, धनदायिनी, महाधनस्वरूपिणी हे देवि ! मेरे पास [सदा] धन रहे, आप मुझे सभी अभिलषित वस्तुएं प्रदान करें ॥१९॥

पुत्रपौत्रधनं धान्यं [१]हस्त्यश्वाश्वतरी रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥२०॥

आप प्राणियों की माता हैं । मेरे पुत्र, पौत्र, धन, धान्य, हाथी, घोड़े, खच्चर तथा रथ को दीर्घ आयु से सम्पन्न करें ॥२०॥

धनमग्नि र्धनंवायु र्धनंसूर्यो धनंवसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिवरुणो धनमश्विना ॥२१॥

अग्नि, वायु, सूर्य, वसुगण, इन्द्र, बृहस्पति, वरुण तथा अश्विनीकुमार—ये सब वैभवस्वरूप हैं ॥२१॥

१. पाठान्तर – हस्त्यश्वादिगवे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२२॥

हे गरुड़ ! आप सोमपान करें । वृत्रासुरके विनाशक इन्द्र सोमपान करें । वे गरुड़ तथा इन्द्र धनवान् सोमपान करने की इच्छावाले के सोम को मुझ सोमपान की अभिलाषावाले को प्रदान करें ॥२२॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम् ॥२३॥

भक्तिपूर्वक श्रीसूक्त का जप करनेवाले, पुण्यशाली लोगों को न क्रोध होता है, न ईर्ष्या होती है, न लोभ ग्रसित कर सकता है और न उनकी बुद्धि दूषित ही होती है ॥२३॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवती हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥२४॥

कमलवासिनी, हाथ में कमल धारण करनेवाली, अत्यन्त धवल वस्त्र; गन्धानुलेप तथा पुष्पहार से सुशोभित होनेवाली, भगवान् विष्णु की प्रिया, लावण्यमयी तथा त्रिलोकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली हे भगवति ! मुझपर प्रसन्न होइये ।।२४।।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ।।२५।।

भगवान् विष्णु की भार्या, क्षमास्वरूपिणी, माधवी, माधवप्रिया, प्रियसखी, अच्युतवल्लभा, भूदेवी भगवती लक्ष्मी को मैं नमस्कार करता हूँ ।।२५।।

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।।२६।।

हम विष्णुपत्नी महालक्ष्मी को जानते हैं तथा उनका ध्यान करते हैं । वे लक्ष्मी जी [सन्मार्गपर चलनेहेतु] हमें प्रेरणा प्रदान करें ।।२६।।

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ।।२७।।

पूर्व कल्प में जो आनन्द, कर्दम श्रीद और चिक्लीत नामक विख्यात चार ऋषि हुए थे । उसी नाम से दूसरे कल्प में भी वे ही सब लक्ष्मी के पुत्र हुए; बाद में उन्हीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुत्रों से महालक्ष्मी अतिप्रकाशमान शरीरवाली हुईं, उन्हीं महालक्ष्मी से देवता भी अनुगृहीत हुए ॥२७॥

ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२८॥

ऋण, रोग, दरिद्रता, पाप, क्षुधा, अपमृत्यु, भय, शोक तथा मानसिक ताप आदि—ये सभी मेरी बाधाएँ सदा के लिए नष्ट हो जाएँ ॥२८॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥२९॥

भगवती महालक्ष्मी ओज, आयुष्य, आरोग्य, धन-धान्य, पशु, अनेक पुत्रों की प्राप्ति तथा सौ वर्ष के दीर्घ जीवन का विधान करें और मानव इनसे मण्डित होकर प्रतिष्ठा प्राप्त करे ॥२९॥

॥ इति ऋक् परिशिष्ट श्रीसूक्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्रम् ॥

इन्द्र उवाच–

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥
नमस्ते गरुड़ारूढे कोलासुर भयङ्करि ।
सर्व पाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयङ्करि ।
सर्व दुःख हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥
सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी ।
मन्त्र पूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥५॥
स्थूल-सूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥६॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥७॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कार भूषिते ।
जगस्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥८॥
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यमाप्नोति सर्वदा ॥९॥
एककालं पठेन्नित्यं महापाप-विनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धन-धान्य समन्वितः ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मी भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदाशुभा ॥११॥

॥ इन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अदिति पुत्र इन्द्र के द्वारा रचित इस 'महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्र' का जो भी प्राणी भक्तिभाव से प्रतिदिन पाठ करते हैं वे समस्त सिद्धियों को प्राप्त करते हैं । जो एक काल (प्रातःकाल) में इसका पाठ करते हैं, उनके महापाप भी नष्ट हो जाते तथा जो दो काल (प्रातः, मध्याह्न) में इसका पाठ करते हैं, वे धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाते हैं, किन्तु जो मनुष्य तीनों कालों (प्रातः, मध्याह्न व सायं) में इस स्तोत्र का पाठ करते हैं, उनके प्रबल से प्रबल शत्रुओं का नाश होता है और भगवती महालक्ष्मी उन पर प्रसन्न होकर स्वयं उन्हें वर देती हैं । अतः शुभ फल चाहने वाले प्रत्येक प्राणी को इस स्तोत्र का पाठ स्वयं करना चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ कनकधारा स्तोत्रम् ॥

अङ्गं हरेः पुलकभूषण माश्रयन्ती, भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताऽखिल-विभूतिरपाङ्ग लीला, माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गल देवतायाः ॥१॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपा-प्रणिहितानि गताऽऽगतानि ।
मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागर सम्भवायाः ॥२॥
विश्वामरेन्द्रपद-विभ्रमदानदक्ष-मानन्द-हेतु रधिकं मुर-विद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध-मिन्दीवरोदर-सहोदरमिन्दिरायाः ॥३॥
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द-मानन्दकन्द मनिमेषमनङ्ग तन्त्रम् ।
आकेकर स्थित कनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥४॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या, हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारे-र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।
मातुः समस्त जगतां महनीय मूर्ति-र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥६॥
प्राप्तः पदं प्रथमतः किल यत् प्रभावान् माङ्गल्य भाजि मधुमाथिनी मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थर-मीक्षणार्ध मन्दाऽलसञ्च मकरालय-कन्यकायाः ॥७॥
दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा-मस्मिन्नकिञ्चन विहङ्ग शिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्म-धर्ममपनीय चिराय दूरं नारायण-प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥८॥
इष्टा विशिष्ट मतयोऽपि यया दयार्द्र-दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्ति-रिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥९॥
गीर्देवतेति गरुडध्वजभामिनीति, शाकम्भरीति शशिशेखर-वल्लभेति ।
सृष्टि-स्थिति प्रलय-सिद्धिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥१०॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै, रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणाश्रयायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र-निकेतनायै पुष्टयै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमोऽस्तु नालीक-विभावनायै, नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूत्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥१२॥
सम्पतकराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि, साम्राज्यदान-विभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि, मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यत् ॥१३॥
यत्कटाक्ष-समुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः ।
सन्तनोति वचनाऽङ्ग मानसैस्त्वां मुरारि-हृदयेश्वरीं भजे ॥१४॥
सरसिजनिलये सरोज हस्ते धवलतरांशुक-गंध-माल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन-भूति करि प्रसीद मह्यम् ॥१५॥
दिग्धस्तिभिः कनक कुम्भ मुखावसृष्ट स्वर्वाहिनी विमल-चारु-जलप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिराज गृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥१६॥
कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥१७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयी त्रिभुवन मातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुधन-भोग भागिनो भवन्ति ते भुविबुधभाविताशयाः ॥१८॥

॥ इति श्रीमदाद्यशंकराचार्य विरचित कनकधारा स्तोत्रम् ॥

यह 'कनकधारा स्तोत्र' भगवत्पाद श्रीमद् आद्यशंकराचार्य जी के द्वारा रचित है। भिक्षावृत्ति से जीविकोपार्जन करने वाले आद्यशंकराचार्य एक दिन भिक्षा के लिए किसी ब्राह्मण के घर में गये उसकी निर्धनता को देखकर इन्हें उस पर अत्यधिक दया आयी और इन्होंने उसी समय इसी स्तोत्रके द्वारा श्री महालक्ष्मी की प्रार्थना करनी प्रारम्भ कर दी, जिसके प्रभाव से उस ब्राह्मण के घर में स्वर्ण की वर्षा होने लगी और वह ब्राह्मण परिवार पूर्णतः धनवान् हो गया । स्वर्ण की वर्षा होने के कारण ही इस स्तोत्र का नाम 'कनकधारा' हो गया । इसका पूर्ण विवरण "शंकर द्विग्विजय" के चतुर्थ सर्ग में पूर्णरूप से वर्णित है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीराजराजेश्वर्यष्टकम् ॥

अम्बा शाम्भवि चन्द्रमौलिरबलापर्णा उमा पार्वती
काली हैमवती शिवा त्रिनयना कात्यायनी भैरवी ।
सावित्री नवयौवना शुभकरी साम्राज्यलक्ष्मीप्रदा ।
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥१॥

अम्बा मोहिनि देवता त्रिभुवनी आनन्दसंदायिनी
वीणापल्लवपाणिवेणुमुरलीगानप्रिया लोलिनी ।
कल्याणी उडुराजबिम्बवदना धूम्राक्षसंहारिणी ।
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥२॥

अम्बा नूपुररत्नकङ्कणधरी केयूरहारावली
जातीचम्पकवैजयन्तिलहरी ग्रैवेयवैराजताम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वीणावेणुविनोदमण्डितकरा वीरासने संस्थिता ।
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥३॥
अम्बा रौद्रिणिभद्रकालि बगुला ज्वालामुखी वैष्णवी
ब्रह्माणी त्रिपुरान्तकी सुरनुता देदीप्यमानोज्ज्वला ।
चामुण्डा श्रितरक्षपोषजननी दाक्षायणी वल्लवी ।
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥४॥
अम्बा शूलधनुःकुशाङ्कुशधरी अर्धेन्दुबिम्बाधरी
वाराही मधुकैटभप्रशमनी वाणीरमासेविते ।
मल्लाद्यासुरमूकदैत्यमथनी माहेश्वरी चाम्बिका ।
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥५॥
अम्बा सृष्टिविनाशपालनकरी आर्या विसंशोभिता
गायत्री प्रणवाक्षरामृतरसपूर्णानुसंधीकृता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओंकारी विनतासुतार्चितपदा उद्दण्डदैत्यापहा ।
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥६॥
अम्बा शाश्वत मागमादिविनुता यार्या महादेवता
या ब्रह्मादिपिपीलिकान्तजननी या वै जगन्मोहिनी ।
या पञ्चप्रणवादिरेफजननी या चित्कला मानिनी ।
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥७॥
अम्बा पालितभक्तराजमनिशमम्बाष्टकं यः पठे-
दम्बालोककटाक्षवीक्षललिता ऐश्वर्यमव्याहता ।
अम्बापावनमन्त्रराजपठनादन्तीशमोक्षप्रदा ।
चिद्रूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥८॥

॥ इति श्रीराजराजेश्वर्यष्टकम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ आरार्तिः[1] ॥

पंचप्रदीप प्रज्ज्वलित करके गन्ध, अक्षत, पुष्प से आरती का पूजन करें—

ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमग्नाय धीमहि ।
तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ॥

आरार्तिक्यै नमः गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

वैदिक आरार्तिक्यम्—

ॐ इदᳬ हविः प्रजननन्मे ऽअस्तु दशवीरᳬ सर्व्वगणᳮ स्वस्तये। आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि । अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्त्वन्नं पयोरेतो ऽअस्मासु धत्त ॥१९/४८॥

ॐ आरात्रि पार्थिवᳬ रजः पितुरप्प्रायि धामभिः ।
दिवः सदाᳮ सिबृहती व्वितिष्ठस ऽआत्त्वेषंव्वर्त्ततेतमः ॥३४/३२॥

---

१. पञ्चनीराजनं कुर्यात्प्रथमं दीपमालया । द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा ॥ चूताश्वत्थादि पत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम् । पंचमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधि ॥ (कालोत्तर तन्त्रे)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिःँ सूर्य्यःँ स्वाहा । अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चःँ स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चःँ स्वाहा । ज्योतिःँ सूर्य्यःँ सूर्य्योज्ज्योतिःँ स्वाहा ॥३/९॥

ॐ येदेवासोदिव्व्येकादशस्त्थ पृथिव्व्यामद्ध्येकादशस्त्थ ।
अप्प्सुक्षितो महिनैकादशस्त्थते देवासो यज्ञमिमञ्जुषद्ध्वम् ॥७/१९॥

लौकिक आरती—

॥ श्री लक्ष्मीजीकी आरती ॥

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशिदिन सेवत हर विष्णु ध्याता ॥ जय लक्ष्मी०
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता ।
सूर्य चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ जय लक्ष्मी०
दुर्गारूप निरञ्जनि, सुख-सम्पत्ति-दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ॥ जय लक्ष्मी०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभ-दाता ।
कर्मप्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ॥ जय लक्ष्मी०
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥ जय लक्ष्मी०
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता ।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ जय लक्ष्मी०
शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरो-दधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता ॥ जय लक्ष्मी०
श्री महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ जय लक्ष्मी०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीदेव्या आरार्तिक्यम् ॥

प्रवरातीरनिवासिनि निगमप्रतिपाद्ये पारावारविहारिणि नारायणि हृद्ये ।
प्रपञ्चसारे जगदाधारे श्रीविद्ये प्रपन्नपालननिरते मुनिवृन्दाराध्ये ॥१॥
जय देवि जय देवि जय मोहनरूपे! मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे ॥
(ध्रुवपदम्)

दिव्यसुधारकवदने कुन्दोज्ज्वलरदने पदनखनिर्जितमदने मधुकैटभकदने ।
विकसितपङ्कजनयने पन्नगपतिशयने खगपति गहनेगहने सङ्कटवहन दहने ॥
जय देवि० ॥

मञ्जिराङ्कितचरणे मणिमुक्ताभरणे कञ्चुकिवस्त्रावरणे वक्त्राम्बुजधरणे ।
शक्रामयभयहरणे भूसुरसुखकरणे करुणां कुरु मे शरणे गजनक्रोद्धरणे ॥
जय देवि० ॥

छित्वा राहुग्रीवां पासि त्वं विबुधान् ददासि मृत्युमनिष्टपीयूषं विबुधान् ।
विहरसि दानव ऋद्धान् समरे संसिद्धान् मध्वमुनीश्वरवरदे पालय संसिद्धान् ॥
जय देवि०॥

॥ इति श्रीदेव्या आरात्रिकं समाप्तम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

जल पात्र तीन बार आरती के ऊपर से घुमाकर सभी के ऊपर जल का छींटा दें ।

पात्रमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं देव्योपरि ।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां सर्वं पापं व्यपोहति ॥

भगवान् को आरती दें तदनन्तर स्वयं आरती लें ।

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु, नसोऽर्मे प्राणोऽस्तु, अक्षणोऽर्मे चक्षुरस्तु, कर्णयोऽर्मे श्रोत्रमस्तु, बाह्वोऽर्मे बलमस्तु, ऊर्वोऽमे ओजोऽस्तु, सर्वाङ्गानि मे तनूस्तन्वानि मे सह सन्तु ॥

हस्त प्रक्षालन कर, हाथों में पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणिप्रथमान्न्यासन् । तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसादध्याः सन्ति देवाः ॥$\frac{३१}{१६}$॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति ॥

तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्श्वतो मुखो व्विश्वतो बाहुरुत व्विश्वतस्प्पात्।
सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देव ऽएकः ॥$\frac{१७}{१९}$॥

ॐ लम्बोदराय विद्महे महोदराय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥१॥
ॐ गणाम्बिकायै विद्महे कर्म सिद्ध्यै च धीमहि । तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥२॥
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥३॥
ॐ वैश्रवणाय विद्महे यक्षराजाय धीमहि । तन्नो कुबेरः प्रचोदयात् ॥४॥
ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि । तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्॥५॥

साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै श्री महालक्ष्म्यै नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिः समर्पयामि नमस्करोमि ।

प्रदक्षिणा[१]

ॐ येतीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्त्तानिषङ्गिणः । तेषा७ सहस्त्रयोजनेव
धन्न्वानि तन्मसि ॥$\frac{१६}{६१}$॥

१. एका चण्ड्या रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके ।
चतस्रो विष्णवे दद्याच्छिवे सार्द्ध प्रदक्षिणाः ॥ (लिङ्गार्चन चन्द्रिका)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति ।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥१॥

कायवाङ्मानसं पापं यत्कृतं जन्मजन्मनि ।
तन्मे नाशय देवि त्वं प्रदक्षिणविधानतः ॥२॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥३॥

साष्टाङ्ग दण्डवत्[१] प्रणामः

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ॥

१. उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा ।
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टाङ्ग उच्यते ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अथ क्षमा प्रार्थनां ॥

नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्वदर्चनात् ॥१॥
विश्वरूपस्य भार्यासि पद्मे पद्मालये शुभे ।
महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं सुखरात्रिं कुरुष्व मे ॥२॥
वर्षाकाले महाघोरे यन्मया दुष्कृतं कृतम् ।
सुखरात्रि प्रभातेऽद्य तन्मे लक्ष्मीर्व्यपोहतु ॥३॥
या रात्रिः सर्वभूतानां या च देवेष्ववस्थिता ।
संवत्सरप्रिया या च सा ममाऽस्तु सुमङ्गलां ॥४॥
माता त्वं सर्वभूतानां देवानां सृष्टिसम्भवा ।
आख्याता भूतले देवि सुखरात्रि नमोऽस्तु ते ॥५॥
दामोदरि नमस्तेऽस्तु नमस्त्रैलोक्यमातृके ।
नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वरि ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शङ्खचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे शुभानने ।
मम हृत्स्थ वरं देहि सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥७॥
नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि महासौख्यप्रदायिनि ।
सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानाय मुक्तिहेतवे ॥८॥
धन धान्यं धरां हर्षं कीर्तिमायुर्यशः श्रियम् ।
तुरगान् दन्तिनः पुत्रान् महालक्ष्मि प्रयच्छ मे ॥९॥
यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु ।
न बाध्यन्तां कुकर्माणि सङ्कटान्मे निवारय ॥१०॥
न्यूनं वाप्यतुलं वापि यन्मया मोहितं कृतम् ।
सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥११॥
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ।
आगता सुख सम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात् ॥१२॥

॥ इति क्षमा प्रार्थना ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विप्रार्चनम्–

यजमान गन्ध, अक्षत, पुष्प से ब्राह्मण देवता[१] का पूजन करें, मौली बांधे तथा प्रचुर मात्रा में धन (दक्षिणा), वस्त्र, फल, मिष्ठान इत्यादि देकर ब्राह्मण देवता को प्रसन्न कर प्रणाम करे–

तिलक मन्त्र :– **नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च ।**

जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

ब्राह्मण यजमान को रक्षासूत्र बांधें ।

रक्षासूत्र बांधने का मन्त्रः–**ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाꣳ। तन्मऽ आबद्ध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥३४/५२॥**

इस प्रकार प्रणाम करके आशीर्वाद ग्रहण करें ।

---

१. देवाधीना जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः । ते मन्त्राः ब्राह्मणाधीनाः तस्माद् ब्राह्मण देवताः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आशीर्वादः—

ॐ पुनस्त्वाऽदित्त्या रुद्राव्वसवᳬ समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः घृतेनत्त्वन्तन्न्वंव्वर्द्धयस्व सत्त्याः सन्तु यजमानस्य कामाᳬ ॥१२/४४॥

स्वस्तिरस्तु ।

देव विसर्जन—

यजमान हाथ में अक्षत लेकर इस प्रकार विसर्जन करे—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम् ।
इष्टकाम समृद्धयर्थं पुनरागमनाय च ॥

विसर्जन करते हुए यजमान इस प्रकार कहे—

श्री गणेश–लक्ष्मी जी, सिद्धि–बुद्धि, धर्म–कर्म, लक्ष–लाभ मेरे यहां स्थिर रूप से विराजमान रहें तथा नवग्रह आदि अन्य समस्त देवी–देवता अपने–अपने स्थान में जाएं पुनः आवाहन करने पर आने की कृपा करें । इस प्रकार कहकर वेदी पर अक्षत छोड़ दें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्पश्चात् यजमान भगवान् नारायण का स्मरण करे

"ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः ।" तीन बार उच्चारण करे।

जयघोषः

धर्मस्य-जयोऽस्तु, अधर्मस्य-नाशोऽस्तु, प्राणिषु-सद्भावोऽस्तु, विश्वस्य-कल्याणमस्तु, भगवत्पाद[1] श्रीमदाद्यजगद्गुरु शंकराचार्य महाभागानां-जयोऽस्तु, यतिचक्रचूडामणिः धर्मसम्राट्[2] अनन्तश्री स्वामी करपात्री महाभागानां-जयोऽस्तु ।

हर हर महादेव ॥

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

॥ विष्णुस्मरणात् परिपूर्णतास्तु ॥

॥ इतिश्री साङ्गोपाङ्ग दीपावली-महालक्ष्मीपूजनपद्धतिः ॥

---

१. कल्यादौ द्विसहस्रान्ते लोकानुग्रह काम्यया:। चतुर्भिः सह शिष्यैस्तु शङ्करोऽवतरिष्यति (शंकर दिग्विजय)

२. श्री शङ्कराचार्य नवावतारं विद्वद्वरेण्यं च यतीन्द्र मुख्यं । कलौयुगे धर्मयुगप्रवर्तकं नमाम्यहं श्री करपात्रिणं यतिम् ॥

(आचार्य श्री श्यामलाल शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य धर्मसंघ महाविद्यालय, दिल्ली)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्री दीपावली (महालक्ष्मी) पूजन सामग्री ॥

रोली	मिष्ठान (मोदकादि)	दूध	सिक्के चांदी के नये
मौली	ताम्र कलश	दही	(वृद्धि हेतु)
चावल	दूर्वा (दूब)	शहद	धोती सिल्क की
पान	खील-खिलौने	घी	दुपट्टे
सुपारी	बताशे	शर्करा	साड़ी ब्लाउज
लौंग	श्रीगणेश-लक्ष्मी (मूर्ति)	सिन्दूर	महालक्ष्मी जी का श्रृंगार
इलाइची	लाल वस्त्र	हल्दी	व आभूषण
धूप	सफेद वस्त्र	दोने	फलों के रस (अभिषेकार्थ)
कपूर	यज्ञोपवीत	अबीर (गुलाल)	गुलाबजल
शुद्ध रुई	केसर	कुबेर जी की मूर्ति	गंगाजल
माचिस	चंदन	गुड़	पंचपल्लव–
नारियल	पंचमेवा	हल्दी की गांठ	आम्र पत्र, गूलर पत्र, पाकर
पुष्पमाला	इत्र	सरसों का तेल	पत्र, वट पत्र, पीपल पत्र
कमल के पुष्प	पीली सरसों	मिट्टी के दीपक	
कमलगट्टे	आंवले का मुरब्बा		
ऋतुफल	साबुत धनिया		

नोट :– विद्वज्जन (पूजक) सामग्री की मात्रा आवश्यकतानुसार निर्धारित कर लें ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीसूक्त

दरिद्रता और दीनताहीन जीवन से छूटने के लिये ऋषियों ने अनेक प्रकार के अनुष्ठान, जप-तप और दान आदि कर्मों का विधान कहा है।

ऋग्वेद के परिशिष्ट-श्रीसूक्त में धन प्राप्ति के लिये मन्त्र हैं। वाराणसी के विद्वान् उमेश मिश्र (सुपुत्र श्री वेणीराम गौड़) ने इन मन्त्रों का सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। सम्पुटित श्रीसूक्त, ऋणहर्त्ता गणेशस्तोत्र, बिक्री वृद्धि के लिये मन्त्र, कुबेर पूजन एवं श्रीयन्त्र व उनकी पूजनविधि आदि भी पुस्तक में सम्मिलित कर दिये हैं जिनके नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से निश्चय ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

डाक व्यय अलग

मूल्य : रु० ३५.००

प्रत्येक पुस्तक के साथ पूजा के लिये रंगीन श्रीयंत्र मुफ्त संलग्न है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री शिवार्चनम्

(पौराणिक एवं शुक्लयजुर्वेदीय)

भगवान् शिव समस्त देवताओं में ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ हैं । अतः देवादिदेव कहे जाते हैं । आशुतोष नीलकण्ठेश्वर की पूजा का अनादिकाल से प्रचलन है, परन्तु संपूर्ण सविधि पूजन पद्धति का अभाव ही रहा है ।

प्रस्तुत पुस्तक में वेदोक्त व पुराणोक्त दोनों प्रकार के मंत्रों द्वारा नवग्रह पूजन, षोडशमातृका, वशोर्धरा, नान्दीश्राद्ध, पुण्याह्वाचन, रुद्रकलश (यंत्र) आदि का समावेश एवं माँ पार्वती व पिता शिव की पूजा का सांगोपांग वर्णन है ।

अतः शिव तथा शक्ति पूजा वर्णित है । गागर में सागर भरने का प्रयास है ।

मूल्य : रु० १०१.००　　पृष्ठ संख्या : ४०८　　डाक व्यय पृथक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लक्ष्मी-नारायणहृदयस्तोत्र

आज के युग में मनुष्य धन से ही श्रेष्ठ और गुणवान माना जाता है। नारायण के बिना लक्ष्मी की कृपा सम्भव नहीं है। इनकी उपासना से धन के साथ-२ सुख, शांति भी प्राप्त होती है। अतः सुख-शांति-समृद्धि प्राप्ति के लिये लक्ष्मी-नारायण दोनों ही की पूजा करनी चाहिये।

पुस्तक में संग्रहित लक्ष्मी नारायण पूजन विधि, स्तोत्र, मंत्र प्रयोग, लक्ष्मी कवच, नारायण की नाम माला आदि पाठ करने से अपार धन की प्राप्ति तथा सुख-समृद्धि की वृद्धि होती है।

पृष्ठ संख्या : १३६ मूल्य : ₹ २५.०० डाकखर्च : अलग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नित्यकर्म विधि तथा देवपूजा पद्धति

इस पुस्तक में निम्न विषय वर्णित हैं-सम्पूर्ण नित्यकर्म विधि मुद्रा-चित्रों सहित, पूजा विधि, अष्टक स्तोत्र, आरती, महालक्ष्मी बहीबसना पूजा, संक्षिप्त गीता-भागवत-रामायण, पञ्चबलि यज्ञ, श्राद्ध, तर्पण विधि, वेदपाठ विधि फल सरल ढंग से दिये हैं।

साथ ही व्रत-तिथि-जयंति निर्णय, विभिन्न पूजाओं में प्रयोग की सामग्री, देवी-देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा तथा संक्षिप्त विवाह पद्धति सम्मिलित कर पण्डितों को अत्यन्त सुविधा प्रदान की है। इस पुस्तक की सहायता से एक साधारण व्यक्ति भी विद्वान् पण्डित की तरह सम्पूर्ण पूजा-पाठ करा सकता है।

श्री ठाकुर दास सुरेका, सलकिया (हावड़ा) के नाम से प्रसिद्ध इस पुस्तक की लगभग ४ लाख प्रतियाँ निःशुल्क वितरित की जा चुकी हैं। अब यह पुस्तक बिक्री के लिए भी प्राप्त है।

पृष्ठ संख्या : २८८ मूल्य : ₹ ४४.०० डाकखर्च : अलग

सन् १८७४ से पूर्व स्थापित पुस्तक प्रकाशन परम्परा

प्रकाशक : पूजा-पाठ व धार्मिक पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता

नाथ पुस्तक भण्डार

दरीबा कलां, दिल्ली-110006 दूरभाष: २३ २७ ५३ ४४

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection